तेज पाक्षिक, मनोरंजन टैक्स २.०० रुपये
अंक : २२ वर्ष : १८ १५-३० नवम्बर १९८२
दीवाना
दीपावली विशेषांक

मेरिट लिस्ट में वही बच्चा आता है जिसका मानसिक विकास औरों से बेहतर होता है... और बेहतर मानसिक विकास के लिए उसे चाहिए...

चिल्ड्रन्स नॉलिज बैंक

VOL. I & II

बच्चे का बौद्धिक विकास तभी बेहतर होता है, जब पाठ्य-पुस्तकें पढ़ने के अतिरिक्त उसके मस्तिष्क में उभरने वाले 'क्यों ?' और 'कैसे ?' किस्म के सैकड़ों-हज़ारों प्रश्नों के समुचित उत्तर उसे सही समय पर मिलते रहें ? और ऐसे ढेरों अनबूझे प्रश्नों के सही उत्तरों के लिए उसे चाहिए......

चिल्ड्रन्स नॉलिज बैंक VOL. I & II

प्रत्येक भाग में लगभग 200 प्रश्न
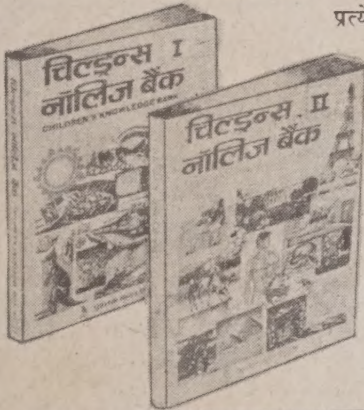
बड़े साइज के 240 पृष्ठ
मूल्य 20/- प्रत्येक
डाकखर्च माफ़

चिल्ड्रन्स नॉलिज बैंक की योजना पर विशेषज्ञों की एक पूरी टीम कार्य कर रही है, जिसमें वैज्ञानिकों व अनुभवी लेखकों-सम्पादकों के अलावा चित्रकारों का एक पूरा दल शामिल है।

Also on Sale

English Edition of Volume I & II
Excels in text and illustrations
Price and pages same

सभी पुस्तकें प्रमुख बुक सेलरों, ए० एच० व्हीलर के स्टॉल तथा अन्य बस अड्डों पर स्थित बुक स्टालों पर मिलती हैं।

मानव-शरीर, जीव-जन्तु, धरती-जल-आकाश, खनिज, खेल-खिलाड़ी, सामान्य ज्ञान, भौतिक-रसायन व जीव विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान तथा वैज्ञानिक आविष्कारों से संबंधित अनगिनत

प्रश्नों में से कुछ की झलक :

• एंटी बायोटिक्स क्या हैं ? • चश्मे से सही कैसे दिखाई देता है ? • सप्ताह के दिनों के नाम कैसे पड़े ? • रेगिस्तान कैसे बनते हैं ? • घड़ियों के माणिक (ज्यूल्स) क्या होते हैं ? • बिना खाये कितने दिन रहा जा सकता है ? • व्यक्ति बूढ़ा क्यों होता है ? • औले कैसे बनते हैं ? • इन्द्रधनुष कैसे बनता है ? • विश्व के सात आश्चर्य कहां गए ? • आंधी और तूफान कैसे आते हैं ? • चलते समय चांद हमारे साथ-साथ क्यों चलता है ? • प्रेशर कुकर में खाना जल्दी क्यों पकता है ? • थर्मस फ्लास्क में गर्म चीजें गर्म और ठंडी चीजें ठंडी क्यों रहती हैं ? • एक्स किरणें क्या हैं ? • परमाणु बम क्या है ? • महिलाओं की आवाज सुरीली क्यों होती है? • रोने में आंसू क्यों निकलते हैं ? • मुंह से आवाज कैसे पैदा होती है ? • सर्दियों में मेंढ़क कहां चले जाते हैं ? • मधु-मक्खी शहद कैसे बनाती है ? • फल खट्टे या मीठे क्यों होते हैं ? • ताश खेलना कब शुरू हुआ ? • क्या ब्रैडमैन रन बनाने की मशीन था ?

वी. पी. पी. द्वारा मंगाने के लिये लिखें

पुस्तक महल

खारी बावली, दिल्ली-110006

नया शो रूम : 10-B, नेता जी सुभाष मार्ग, दरिया गंज, नई दिल्ली-

VANDANA/PM/H-30

लक्ष्मी जी की माया कहीं रेखा कहीं लक्ष्मी छाया

हमारी फिल्मी हस्तियों ने वर्ष भर में क्या-क्या दीवाली गुल खिलाये–उसकी एक मनोरंजक झलक
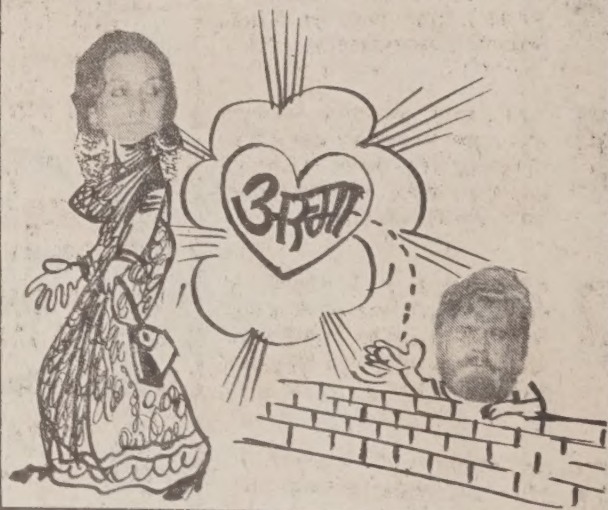
आपका भविष्य

पं. कुलदीप शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं. हंसराज शर्मा

मेष : परिश्रम करने पर शुभ-अशुभ मिश्रितफलों की प्राप्ति होगी, सुधार एवं प्रगति के चांस मिलेंगे, कुछ उतार-चढ़ाव तो देखने में जरूर आयेंगे लेकिन आपकी प्रगति में बाधा नहीं पड़ेगी।

वृष : इन दिनों मिश्रितफलों की प्राप्ति होगी, सुस्ती या कमजोरी आदि का प्रभाव रहेगा, कारोबार ठीक रहेगा परन्तु लाभ मध्यम होगा, परिश्रम का फल देर से या आशा से कम।

मिथुन : धन की प्राप्ति होने से परिवार की हालत सम्भलेगी एवं उत्साह भी बढ़ेगा, रोग या ऋण आदि से राहत पायेंगे, कोई एक बुरी सूचना या घटना परेशान कर जाएगी।
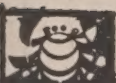
कर्क : सोच-विचार कर एवं सज्जन-पुरुषों के परामर्श से काम करें वर्ना भारी मुसीबत में पड़ सकते हैं, सप्ताह संघर्षमयं है, यात्रा की उम्मीद है पर करें सावधानी से।

सिंह : परिश्रम एवं काफी संघर्ष का सामना होगा, शत्रु एवं बाधा उत्पन्न होकर दब जायेंगी, नये काम से हानि लेकिन स्थायी कामधन्धों से लाभ होता रहेगा।

कन्या : इन दिनों कोई अप्रिय घटना हो सकती है जो परेशानी का कारण बन सकती है, लेकिन आपकी सूझबूझ एवं परिश्रम से हालात आपके वश में रहेंगे, जल्दबाजी से काम लेना उचित नहीं।

तुला : व्यय की अधिकता से मन परेशान लेकिन आमदनी समय पर होती रहने से आपके काम बनते जायेंगे, रोजगार को बढ़ाने हेतु कोई नई योजना पर विचार करेंगे, संघर्ष का जोर बढ़ेगा।
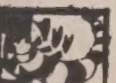
वृश्चिक : किसी दूर के सम्बन्धी या मित्र से कोई बुरी खबर आएगी, सप्ताह विशेष अच्छा नहीं लेकिन आपके कठिन परिश्रम एवं हिम्मत से कुछ विशेष काम सिद्ध हो सकेंगे।
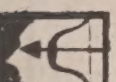
धनु : वातावरण पहले से अनुकूल और परिश्रम द्वारा सफलता भी मिलती रहेगी यह सप्ताह पहले से अच्छा है, धन व्यय के साथ-साथ लाभ भी होता रहेगा, शुभ कामों में रुचि रहेगी।

मकर : सप्ताह अच्छा रहेगा परन्तु वाद-विवाद एवं संघर्ष में पड़ना आपके हित में नहीं, लाभ की प्राप्ति होगी एव हालात में भी सुधार होता दिखाई देगा, कुछ अभीष्ठकार्य सिद्ध होंगे।

कुम्भ : प्रयासों में सफलता मिलती रहेगी, राजकाज में विजय पाने के लिये दौड़-धूप काफी करनी होगी, व्यय भी काफी होगा, भाग्य आपका साथ दे रहा है, परिश्रम से कामयाबी मिलेगी।
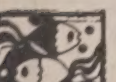
मीन : इन दिनों हालात पर नियन्त्रण बनाए रखने के लिये सावधानी अनिवार्य है, आलस्य आदि से बचें और जल्दबाजी से काम न लें।

दीवाना का अंक नं॰ 18 मिला। आशा के प्रतिकूल यह अंक समय से पहले ही मिल गया। अगर इसी तरह से आप ध्यान देते रहे तो दीवाना को लोग 'लेट' कहना बन्द कर देंगे। सभी फीचर अच्छे थे। दिल्ली स्टेडियम की जानकारी देने के लिए धन्यवाद।

—एन० एस० भाटिया, सूर्य लंका

एक अच्छे अंक के रूप में दीवाना का अंक नं० 18 प्राप्त हुआ। मुखपृष्ठ ही इतना लाजवाब था कि बाकी किसी फीचर के बारे में क्या कहें। कृपया हमारी इस प्यारी पत्रिका में फिल्मी कहानी देना बन्द कर दीजिए और उसकी जगह पर मोटू-पतलू देना शुरू कर दीजिए। आशा है हमारे सुझाव पर आप विचार करेंगे।

—जुगनू, विक्की गोविन्द नगर, कानपुर

मोटू-पतलू कुछ समय के लिये बन्द कर दिया गया है। —सं०

लगभग दो वर्षों के बाद मैं आपको यह पत्र लिख रहा हूं और इसका कारण है 'दीवाना' का बदला हुआ रंग, रूप और बड़ा साइज। पर अब भी एक शिकायत है और वह है दीवाना का लेट आना। 15 सितम्बर को दीवाना मिला और जब पढ़ना शुरू किया तो पूरा समाप्त होने पर ही रुका। लल्लू, सच बात तो ये है, खेलों के प्रतीक चिन्हों से खिलवाड़, प्रेम लीला पर प्रभाव, राजाजी, मदहोश, फीचरों ने हंसाने में कमी न छोड़ी। यह जानकर महान् हर्ष हुआ कि आपने मोटू पतलू की छुट्टी कर दी। वास्तव में ही वह बेकार फीचर था। बस अब आप बन्द करो बकवास को बढ़ाकर फिल्म पैरोडी, चिल्ली लीला तथा दीवाना कार्ड फिर से स्थाई कर दें। दीवाना के महान् परिवर्तन पर शुभकामनायें!

—रमेश 'याराना', पानागढ़ (प. बं.)

आपकी पत्रिका दीवाना का नया अंक 18 मिला। मुखपृष्ठ काफी अच्छा था। कहानियां, फिल्म कहानी एवं अन्य सभी फीचर अच्छे थे परन्तु मोटू-पतलू के वियोग में जो दुख था, वह रत्ती भर कम न हुआ। मोटू-पतलू न देने पर पत्रिका पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा है, कृपया मोटू पतलू अवश्य दें।

—राजेन्द्र बेदी, (सितारगंज)

दीवाना का 18वां अंक पढ़ा अच्छा लगा, कहना जरूरी नहीं है। एक शिकायत है दीवाना हमें बहुत ही देरी से मिलता है इस बार राजीव हसीजा द्वारा नई फिल्म प्रसंग पढ़ा, बिल्कुल घटिया ही लगा क्योंकि यह तो बहुत ही पुराना चुटकला है। प्रेम लीला पर प्रभाव, और जानवर जिनके अस्तित्व को खतरा है बहुत ही पसन्द आया। वाकई यह हैं भी इसी काबिल। बाकी स्थायी स्तम्भ बहुत ही पसन्द आये।

—अशोक खुराना, कलानौर

मुख पृष्ठ पर

पंचशील के निकट घूम रही
लड़की एक दीवानी थी
दिवाली की रात सुहानी
अलबेली मस्तानी थी।
कपड़ों पर बनी फुलझड़ी
चुराई एक चिल्ली ने
आग लगाकर उसे जलाया
वारदात हुई यह दिल्ली में॥

दीवाना

अंक : 22 वर्ष : 18 15-30 नवम्बर 1982

सम्पादक : विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिका : मंजुल गुप्ता
दीवाना तेज पाक्षिक
८-बी, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

वार्षिक चन्दा	:	२७ रुपये
अर्द्ध वार्षिक	:	१४ रुपये
एक प्रति	:	२.०० रुपये

दिवाला पिटने पर क्या करें ?

दीवाली को कई लोगों का दीवाला पिट जाता है, उनकी भलाई के लिए हम कुछ गुर बता रहे हैं कि ऐसा होने पर क्या करें ? घबरायें मत, हमारी सीख पर अमल करें व दीवालिया जीवन सफल बनायें।

दिवालिया होने की खुशी में शानदार पार्टी देने का ऐलान करें। चिन्ता न करें, कोई आयेगा नहीं, इस डर से कि आप पैसे न मांग बैठें। बाद में आप सबको उलाहना दे सकते हैं कि आपने फाइव स्टार होटल में पार्टी का आयोजन किया था। औरों पर मनोवैज्ञानिक दबाव पड़ेगा।

आप दिवालिया हुए तो कइयों के पैसे डूब गए होंगे और उन्हें दिल का दौरा भी पड़ा होगा उन्हें देखने जरूर जायें, आपको देख उन्हें और कष्ट होगा। दिवालिया घोषित होने से पहले पैसों के भुगतान के लिए उन्होंने आपको तंग किया होगा। उसका बदला जरूर लें।

दिवालिया होने पर शर्म तो हट ही जाती है। अब आप बेशर्म होकर वह सब काम कर सकते हैं जिनके पहले ख्वाब ही देखा करते थे। जैसे भूतपूर्व प्रेमिका के दरवाजे पर जा कर गला फाड़ कर गाना, "न माँगे यह सोना चांदी माँगे दर्शन तेरे...,"
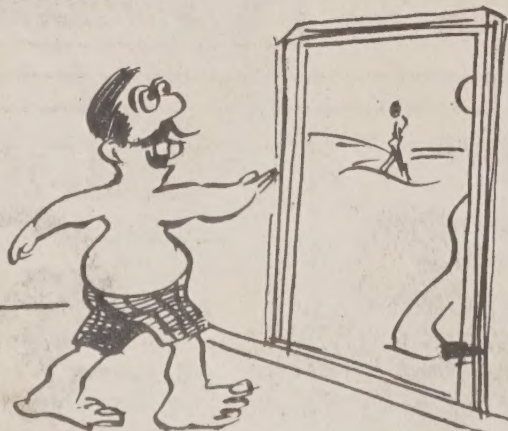
आपके कपड़े उतर ही गये हैं। अब निसंकोच न्यूडिस्ट कलब में भर्ती हो जायें और रंगीन नजारों का आनन्द लें। जीवन का असली आनन्द तो अब आयेगा।

दिवालिये पन की खबर पाकर सारे मित्र व रिश्तेदार आप से कन्नी काट गये होंगे। उन सबको लैटर लिखें कि दिवालिया होना—तो चाल थी वास्तव में आपने पचास लाख रुपए पहले ही निकाल कर दबा रखे थे। पत्र डालने के बाद दूसरे शहर जाकर नाम बदल कर किसी होटल में भांडे मांजना शुरू करें। आपके रिश्तेदार व मित्र पछता-पछता कर अपने बाल नोचते रहेंगे।

नम्बर दो की लक्ष्मी

—संजय कुमार श्रीवास्तव "सरल"

इस साल दीवाली पर लक्ष्मी जी ने सोचा कि मानव-जाति का कुछ भला हो जाए। गरीबों की समस्यायें दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही हैं। अमीर अपने माध्यम से दिन पर दिन उन्नतिशील होते जा रहे हैं। सारांश यह कि गरीब और गरीब तथा अमीर और अमीर हो रहे हैं। यह देखकर धन की देवी लक्ष्मी जी ने सोचा कि यदि मानव-जाति की आर्थिक समस्यायें हल हो जायें तो गरीबी और अमीरी की भेद-भावना अपने आप ही मिट जाएगी। यह सोचकर लक्ष्मी जी धरती पर भ्रमण करने के लिए निकल पड़ीं।

कुछ दूर चलकर लक्ष्मी जी एक घर के सामने खड़ी हो गयीं। घर का मालिक चारपाई पर लेटा था और हुक्का गुड़गुड़ा रहा था। उस वृद्ध के कपड़े तार-तार हो चुके थे और उसमें उसका क्षीणकाय शरीर स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था।

लक्ष्मी जी ने सोचा, 'बेचारा कितनी गरीबी भोग रहा है। इसका दुःख दूर करना ही होगा।' यह सोचकर लक्ष्मी जी अपने वास्तविक रूप में आ गई।

बूढ़े ने पहले तो कुछ देर आश्चर्य से उनकी ओर देखा और जब वह पहचान गया तो जल्दी से भीतर घुस गया। भीतर घुसकर वह घर के दोनों किवाड़ बंद करने लगा।

अब लक्ष्मी जी के आश्चर्य की सीमा न रही। उन्होंने कुछ देर तक अविश्वास की नजरों से बंद दरवाजे की ओर देखा। कुछ सोचकर उन्होंने दरवाजा खटखटाया।

'कौन है?' अन्दर से आवाज आई।

'मैं लक्ष्मी हूं, धन की देवी लक्ष्मी। मैं तुम्हारे दुःख दूर करने आई हूं। दरवाजा खोलो।' लक्ष्मी जी ने कहा।

'मैं जानता हूं कि तुम लक्ष्मी हो। मगर मैं दरवाजा नहीं खोलूंगा।'

'मैं तुम्हें धन देना चाहती हूं।'

'मुझे धन नहीं चाहिए।' भीतर से आवाज आई।

'आखिर क्यों? तुम ऐसा क्यों चाहते हो?' इस बार लक्ष्मी के स्वर में हल्का आश्चर्य था।

'तुम मुझे धनवान बना दोगी। पड़ौसी मुझसे जला करेंगे। चौर-डाकू का भय बना रहेगा।'

'तुम अपना पैसा बैंक में रख देना। चोरी का भय ही नहीं रह जाएगा,' लक्ष्मी जी ने समझाया।

'बैंक में रखने पर इन्कमटैक्स देना पड़ेगा। हिसाब-किताब रखना पड़ेगा। यह मुझसे नहीं होगा।'

निराश होकर लक्ष्मी जी आगे बढ़ने ही वाली थीं कि पटाक से दरवाजा खोल कर वह बृद्ध बाहर आया। उसने लक्ष्मी जी की ओर देखा और दोनों हाथ जोड़ दिये।

'बोलो क्या चाहते हो?' लक्ष्मी जी खुश होकर बोलीं।

'मैं नम्बर दो की लक्ष्मी चाहता हूं।'

'नंबर दो की लक्ष्मी;' लक्ष्मीजी के माथे पर बल पड़ गए, 'यह नंबर दो की लक्ष्मी कौन है?'

'मुझे क्या जबाव दे रही हो देवी?'

'बाबा, इस विषय में मैं तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकती। मैं मजबूर हूं 'बाबा' 'यह कहते हुए लक्ष्मी जी आगे बढ़ गई।

रास्ते में लक्ष्मी जी बराबर नंबर दो की लक्ष्मी के बारे में सोचती रहीं, आखिर यह नंबर दो की लक्ष्मी कहां से पैदा हो गई! अभी तक तो सिर्फ मैं ही थी।

कुछ सोचकर लक्ष्मी जी एक घर के सामने खड़ी हो गईं। घर के बाहर एक चारपाई बिछी थी। लक्ष्मी जी पैदल चलते-चलते थक गई थीं। थोड़ा आराम करने के उद्देश्य से वे उस पर बैठ गईं।

अभी उन्हें बैठे हुए दस मिनट भी नहीं बीते होंगे, कि किसी के बाहर आने की आवाज सुनाई पड़ी। लक्ष्मी जी झट से उठ कर खड़ी हो गईं।

'कौन है?' भीतर से निकलने वाले ने पूछा।

'मैं लक्ष्मी हूं, लक्ष्मी जी ने उत्तर दिया।

'कौन लक्ष्मी?' कुछ सोचते हुए उस युवक ने कहा।

'अरे तुमने मुझे पहचाना नहीं? मैं धन की देवी हूं।'

'यहाँ क्यों आई हो?'

'तुम्हें मालामाल करने के लिए।'

युवक ने थोड़ी देर तक अविश्वास की नजरों से लक्ष्मी जी की ओर देखा फिर बोला, 'अच्छा यह बताओ कि तुम कौन सी लक्ष्मी हो? नंबर एक की लक्ष्मी या नंबर दो की लक्ष्मी?'

'नंबर दो की लक्ष्मी?' लक्ष्मी जी को दूसरी बार तेज झटका लगा,' आखिर यह नंबर दो की लक्ष्मी कौन सी बला है। जहां जाओ, इसी का नाम आगे आता है।' क्रोध से लक्ष्मी जी का चेहरा फूलने-पिचकने लगा।

गुस्से में पैर पटकती हुई वे वहां से चल पड़ीं।

क्रोध कुछ शांत होने पर वे दूसरे घर पर अपनी कृपा-दृष्टि करने पहुंचीं। वहां भी इसी तरह नंबर दो की लक्ष्मी का जिक्र आया।

'तुम कौन सी लक्ष्मी हो? नंबर एक की लक्ष्मी या नंबर दो की लक्ष्मी?

'मैं असली यानि नंबर एक की लक्ष्मी हूं।'

'तब तुम जाओ। मेरे पास तुम्हारे लिए स्थान नहीं है। मैं तो सिर्फ नंबर दो की लक्ष्मी चाहता हूं।'

लक्ष्मी जी को ऐसे उत्तर की आशा नहीं थी। वे सन्न रह गईं। कुछ देर तक खड़ी वे कुछ सोचती रहीं, फिर आगे बढ़ गईं।

तीसरे, चोथे और पांचवें घर में से भी लक्ष्मी जी को ऐसे ही उत्तर मिले, जिनकी उन्हें आशा नहीं थी।

लक्ष्मी जी ने सोचा, 'पता नहीं आज कल के लोगों को क्या हो गया है, जो सभी नंबर दो की लक्ष्मी के पीछे पड़े हुए हैं।"

लक्ष्मी जी ने समझ लिया कि लोगों के पास उनके लिए स्थान नहीं है, इसी लिए वे स्वर्ग लोक चल पड़ीं। रास्ते भर वे नंबर दो की लक्ष्मी के विषय में सोचती रहीं। उन्होंने निश्चय किया कि विष्णु भगवान से आज ही न्याय मांगूंगी।

मन ही मन इसी तरह की बातें सोचती हुई लक्ष्मी जी जब विष्णु भगवान के समीप पहुंचीं, तो वे सन्न रह गईं।

वहां पर अजीब दृश्य मौजूद था। विष्णु भगवान शेष-शैय्या पर लेटे हुए थे। दो नंबर की लक्ष्मी उनके पैर दबा रही थी, और कृपानिधान विष्णु उनकी ओर प्रेमभरी दृष्टि से निहारते हुए मंद-मंद मुस्करा रहे थे।
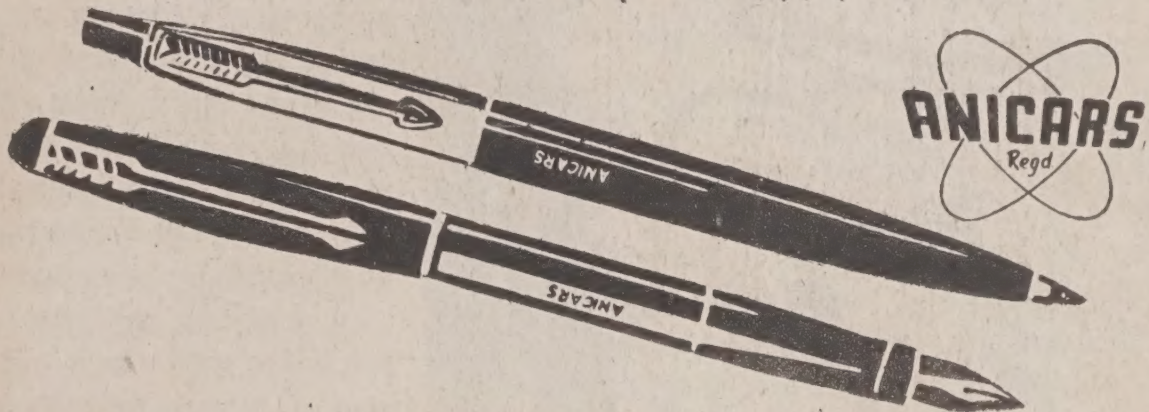
अनोखे सच

हाल ही में नागपुर में जाति बदलने का एक अनोखा तरीका देखा गया। एक मुस्लिम और एक हिन्दू ने शादी करने के लिए बौद्ध धर्म को अपना लिया।

शब्बीर हुसैन और जीवन शाहू जो मध्य प्रदेश के हैं दोनों एक दूसरी जाति की लड़की से प्रेम करते थे परन्तु माता-पिता से विवाह की अनुमति प्राप्त करने में असमर्थ रहे, इसलिये दोनों ने नागपुर में आ दीक्षा भूमि में बौद्ध धर्म अपनाया।

●

चीन में एक स्त्री को माता-पिता के दबाव के कारण 30 वर्ष की आयु तक पुरुष वेष में रहना पड़ा, यहाँ तक कि उसे विवाह भी एक स्त्री से करना पड़ा। स्त्री को एक स्थानीय अफसर के हस्त-क्षेप के बाद ही अपना नारीत्व प्राप्त हो पाया।

मैडम 'जो' ने अपना नारीत्व प्राप्त करने के बाद सबसे पहले अपना नाम स्त्रियों जैसा रखा। उसके माता-पिता ने उसका नाम 'यूलौंग' (जेड ड्रेगन) रखा था जो बिल्कुल ही मरदाना नाम है।

फिर वे एक डिपार्टमेन्टल स्टोर में गईं और अपने लिए जनाना कपड़े खरीदे इसके बाद एक अच्छा पुरुष ढूंढ़ उससे विवाह कर लिया—उसकी पहली पत्नी ने भी दूसरा विवाह कर लिया।

●

हिन्दुस्तान में आखिरी महिला फांसी—

भारत में आखिरी बार एक महिला को फांसी के तख्ते पर सन् 1955 में चढ़ाया गया था। डा० रत्नाबाई को कई हत्याओं के जुर्म में फांसी लगाई गई थी।

स्वतन्त्रता के बाद भारत में यह ही पहली और अन्तिम फांसी पाने वाली महिला थीं।
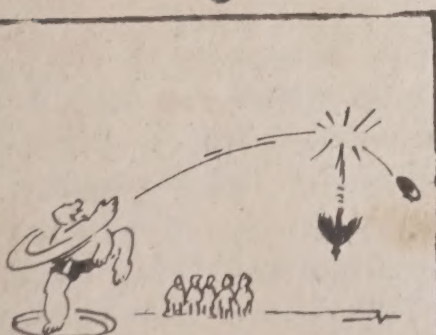
—असीम चक्रवर्ती

उन दिनों करनपुर के जमींदार साहब प्रताप सिंह को शिकार का नया-नया शौक चढ़ा था। यदा-कदा अपने मित्र रुद्र प्रताप के साथ पास के जंगल में जा पहुंचते और हिरण या खरगोश का शिकार कर वापस लौट आते। कभी-कभी वे खाली हाथ लौटते। दोनों ही नौसिखिया शिकारी थे। शिकार भाग जाता तब इनकी गोली चलती। या कई गोलियाँ बरबाद करने के बाद ये दोनों कोई छोटा मोटा शिकार कर पाते। इस पर भी दोनों में हमेशा इस बात पर ठनी रहती कि 'मैं अच्छा शिकारी हूं।' एक दिन दोनों ने इस बात का फैसला करना ही उचित समझा। शर्त के मुताबिक यह तय किया कि वे दोनों जंगल में अलग-अलग दिशा में जायेंगे और अपने ढंग से शिकार खेलेंगे। जो जितने ज्यादा हिरण या खरगोश का शिकार करेगा, वही बेहतर कहलाएगा।

शर्त के मुताबिक निर्धारित दिन दोनों ने जंगल में पहुंचकर अपनी जीप एक किनारे खड़ी की और जंगल के दो अलग-अलग कच्चे रास्तों पर निकल पड़े। जंगल के अन्दर मुश्किल से पांच-छः सौ गज का फासला ही प्रताप सिंह ने तय किया था कि उनका मन खुशी से खिल उठा। उन्हें लगा कि आज की शर्त वे ही जीतेंगे। क्योंकि उनसे तीस-चालिस गज की दूरी पर एक हिरण का बच्चा और उसकी मां टहल रहे थे। उन्होंने अपनी बंदूक झट संभाल ली और निशाना देखने लगे। पर अचानक उनकी नजर सामने की झाड़ियों में चली गई। उन्हें लगा जैसे दो बिजली के छोटे-छोटे बल्ब चमक रहे हों। फिर उन्हें यह समझते ज्यादा देरी नहीं लगी कि ये बिजली के बल्ब नहीं, बल्कि किसी जानवर की दो पानीदार आंखें थीं। अभी वे कुछ और सोच पाते कि उस जानवर ने झाड़ी में से अपना चेहरा निकाला। चेहरा देखते ही प्रताप सिह के होश फाख्ता हो गए। [illegible]ाय शेर उनके सामने था। [illegible] उन्हीं की तरह हिरण का शिकार करने के उद्देश्य से झाड़ी में दुबका पड़ा हुआ था। पर अब उसकी आंखें हिरण की बजाय उन्हें घूर रहीं थीं। उनकी इच्छा हुई कि अपने मित्र रुद्र प्रताप सिंह को बुलाने के लिए एक जोरदार आवाज लगायें। पर कोई फायदा नहीं होने वाला था। इस घने जंगल में उनकी आवाज दबकर रह जाती। उन्होंने अपनी बंदूक कसकर थाम ली और अकेले ही इस शेर से जूझने का निश्चय कर लिया।

इससे पहले कि प्रताप सिंह कांपते हाथों से बंदूक चलाते। शेर ने उन्हें कोई मौका नहीं दिया और एक लम्बी छलांग उनकी तरफ लगा दी। प्रताप सिंह यदि एक क्षण की भी देरी किए बिना अपने स्थान से नहीं हटते तो शेर के पंजे उनके शरीर को बुरी तरह घायल कर जाते। उनके हटते ही शेर एक ओर जा गिरा। लेकिन फिर पलट कर उसने उनकी तरफ उछाल भरी। इस बार भी पहले की तरह अपने स्थान से हटकर प्रताप सिंह ने शेर के वार से अपने आपको बचा लिया। शेर दूर एक झाड़ी में जा गिरा। और उसका यह गिरना ही उसके लिए खतरनाक सिद्ध हुआ। दरअसल उस झाड़ी में एक चीता अपने नवजात शिशुओं के साथ लेटा हुआ था और शेर उन्ही के ऊपर जा गिरा था। उसके भार से बच्चे बिलबिला उठे। शेर झट झाड़ी से उठ खड़ा हुआ और उसने फिर पलटकर प्रताप सिंह पर आक्रमण करना चाहा। पर तब तक प्रताप सिंह अपने आपको पूरी तरह से तैयार कर चुके थे। इससे पहले कि शेर उन पर छलांग लगाता। उन्होंने निशाना साधकर गोली चला दी। गोली सीधे उसके बांयें पैर में जा लगी जबकि निशाना उसके सिर का लगाया था। शेर का बांया पैर बुरी तरह से घायल हो चुका था। लेकिन उसने इसकी परवाह न करते हुए फिर उन पर छलांग लगा दी। और इस बार सफलता भी मिली। शेर के पंजों से शरीर को बचाते-बचाते भी प्रताप सिंह के चेहरे में काफी खरोंच आ गई थीं। और उनकी बंदूक दूर जा गिरी थी। पर वे अपने आपको किसी तरह एक पेड़ की आड़ में छिपाने में सफल हो गए। लेकिन

शेर उन्हें देख चुका था। और वह उठकर उन्हीं की ओर आ रहा था। पर तभी एक भयंकर गर्जना वहां गूंज गई। वह दहाड़ तीन-चार बार जंगल के उस वीरान वातावरण में गूंजी और फिर एक चीता झाड़ियों में से बाहर लपका। उसके साथ उसके तीन छोटे-छोटे बच्चे भी झाड़ियों में से बाहर निकले। चीते की दृष्टि शेर पर थी। प्रताप सिंह ने एक बार सोचा कि वहां से भाग निकले पर यह एकदम नामुमकिन था। क्योंकि वे शेर और चीते के बीच पूरी तरह फंस गए थे। उनके आगे से शेर आ रहा था और पीछे से चीता। इसलिए वे झट से पेड़ के ऊपर जा चढ़े।

शेर एकदम उनके पेड़ के पास आ गया था और उन्हें ही ढूंढ़ रहा था। पर तब तक चीता उनके बिलकुल सामने आ गया था और आक्रमण की पहल उसने ही की। उसे इस बात का रोष था कि शेर ने उसे तथा उसके बच्चों की नींद में बाधा दी है। बिजली के वेग से उसने शेर के ऊपर छलांग मार दी। शेर अकस्मात इस आक्रमण से घबरा गया। चीते ने अपने पंजों का एक भरपूर वार उसकी पीठ पर किया था फिर भी वह चीते पर जरा भी नाराज नहीं हुआ। स्पष्ट था कि इस समय वह चीते से कोई लड़ाई मोल नहीं लेना चाहता था। उसका असली दुश्मन तो प्रताप सिंह था जिसकी एक गोली से उसका पांव बुरी तरह घायल हो गया था। पर चीते का गुस्सा कहां शांत होने वाला था, इस वक्त वह बुरी तरह लड़ने के लिए उतारू था। पिता का यह गुस्सा देखकर उसके तीनों छोटे-छोटे बच्चे फिर एक झाड़ी में दुबक गए थे। उसने फिर अपने अगले पैर से एक जोरदार [illegible] शेर के गले पर जड़ दिया। इस बार [illegible] चीते का यह प्रहार बरदास्त नहीं कर पाया। उसे भी क्रोध आ गया। उसने पलट कर अपने दाएं पैर से एक नपा तुला पंजा चीते के चेहरे पर जड़ दिया। शेर के इस प्रहार से चीते को काफी चोट आ गई। इस बार उसने अपने पैरों के कई जोरदार प्रहार दनादन शेर के ऊपर जड़ दिये। दरअसल शेर के जवाबी हमले से उस गुस्से ने और भी जोर पकड़ लिया। अब उसने पूरी तरह से शेर का घमंड चकनाचूर करने का निश्चय कर लिया था।

चीते के कई हमलों से शेर को काफी चोट आई। वह निढाल होकर थोड़ी देर के लिए जमीन पर गिर पड़ा। और चीते ने फिर शेर की इस कमजोरी का फायदा उठाया। इससे पहले कि शेर जमीन से उठ पड़ता चीते ने अपने पंजे तान लिए और शेर पर इस जोर से जा लिपटा कि उसने शेर का सारा शरीर ही झकझोर दिया। शेर को दिन में ही तारे नजर आने लगे थे। अब वह भी पूरी तरह से चीते से लड़ने के लिए तैयार था पर उसकी शक्ति क्षीण हो चली थी। फिर भी वह जंगल का राजा था। वह झट खड़ा हुआ पर इस बार चीते ने उसे बुरी तयह दबोच लिया था। और चीते की पकड़ कोई मामूली पकड़ नहीं थी। उसकी पकड़ से निकलने के लिए शेर को काफी जोर आजमाइश करनी पड़ी। शेर उसकी पकड़ से निकलते ही फिर एक ओर जा गिरा। पर उसने इस बार अपनी कमजोर पड़ती शक्ति को इकट्ठा कर लिया था और एक पांव से घायल होने के बावजूद भी अब वह बुरी तरह उससे गुत्थम-गुत्था कर रहा था। पर जंगल का राजा शेर इस समय चीते की शक्ति के आगे एकदम असहाय था। क्योंकि चीता नये-नये पंतरे इस मुठभेड़ में आजमा रहा था। उसके पैंतरे देखने योग्य थे। अपने पैरों की भयंकर मार से उसने शेर को बेहाल कर दिया था।

यह बात नहीं थी कि चीता घायल नहीं हुआ था। वह भी शेर के आक्रमण से बुरी तरह लहुलुहान हुआ था। पर शेर की अपेक्षा उसमें लड़ने की शक्ति और उत्साह चार गुनी ज्यादा थी। जब तक शेर उस पर आक्रमण करने की योजना बनाता। चीता उस पर आक्रमण कर बैठता। और उसका प्रत्येक आक्रमण अत्यन्त घातक होता। शेर सिर्फ बौखला कर ही रह जाता। चीते को इस बात की भी परवाह नहीं थी कि इस लड़ाई के दौरान वह भी अपनी काफी शक्ति खो चुका है। इस समय वह मैदान में टिका था तो सिर्फ अपने उत्साह के कारण। शायद वह जंगल के राजा शेर को यह बता देना चाहता था कि वह उससे उन्नीस नहीं बल्कि बाइस है।

उन दोनों के युद्ध के दृश्य क्षण भर में ही बदल रहे थे। अब दोनों ही योद्धा एक दूसरे पर भरपूर वार करने के लिए कई कदम पीछे हट गए थे। इस बार पलक झपकते ही शेर ने एक लम्बी उछाल भरी, और उसकी यह फुर्ती देखने लायक थी। पर उसके इस पैंतरे का जो लाभ उसे मिलना चाहिए था वह उसे नहीं मिला। क्योंकि इससे पहले कि वह चीते के ऊपर जा गिरता, चीता सफाई से उछल कर एक ओर हो गया। दाव खाली जाने का खमियाजा शेर को चुकाना पड़ा। वह जितनी तेजी से उछला था, उतनी ही तेजी से धरती पर जा गिरा और चीते ने इस मौके का भी भरपूर लाभ उठाया। उसने एक जोरदार पंजा शेर की पीठ पर जमा कर मारा। शेर पस्त होकर एक ओर को लुढ़क गया। पर वाह ! जितनी देर बिजली की चमक में लगती है, उतनी ही देर में शेर ने उठ कर फिर झपटा मारा। पर जवाब में चीते ने फिर एक जोरदार थप्पड़ उसे जड़ दिया जो उसकी खोपड़ी पर पड़ा था। इस बार चीते के इस घातक प्रहार से शेर सम्भल नहीं सका। वह जमीन पर चारों खाने चित्त गिर पड़ा। अब उसके उठने की बाकी बची-खुची शक्ति भी क्षीण हो चली थी। वह अपनी जिन्दगी की अन्तिम सांसें गिन रहा था। चीते ने कुछ देर तक उसके अगले प्रहार का इन्तजार किया, फिर उसे घृणा की दृष्टि से देखते हुए झाड़ी में छिपे अपने तीनों बच्चों को लेकर एक ओर को चला गया।

चीते के हटते ही प्रताप सिंह भी पेड़ से उतर आए। अपने जान के दुश्मन इस शेर से उन्हें भी घृणा हो आयी। यदि आज चीता न होता तो उनकी मृत्यु निश्चित रूप से इस के द्वारा ही होती। चीते के प्रति उनका मन कृतज्ञता से भर गया। उन्होंने अपने बन्दूक की नली शेर के सीने में लगा दी और दनादन दो गोलियां उस दम तोड़ते हुए शेर पर चला दीं। शेर बिना तड़फे ही मौत की गोद में समा चुका था। तभी उन्हें सामने से रुद्र प्रताप आता दिखायी दिया उसके बुझे चेहरे से साफ झलक रहा था कि वह शर्त हार चुका है। एक बार उसकी इच्छा हुई कि रुद्र प्रताप को यह बता दे कि इस शेर का शिकार उन्होंने ही किया है। पर मन ने इसकी इजाजत नहीं दी। ●

सिलबिल पिलपिल
दीवाली के बाद

भाइयों, बहनों और साथियों आप सोच रहे होंगे कि सिल-बिल पिलपिल ओपनिंग शाट से कहां गायब हो गये? चूहा अकेला खिड़की पर क्या कर रहा है? बात यह है कि मेरे याड़ियों की हालत ठीक नहीं है। दीवाली को दोनों जुए में गांठ का पैसा हार गये। पैंट और शर्ट भी उतर गयीं। घड़ी बिक गयीं, जूते गिरवी पड़े हैं। दोनों कमरे में कच्छे बनियान में बैठे हैं, पाठकों के सामने आते उनको सरम आ रही है।

यह हाल है बेचारों का। आपको अपना आदमी समझ कर ही हम यह दिखा रहे हैं। दोनों की गर्दनें लटक कर विलायती तोरी बन गयी हैं, मुंह को टिकाने के लिये मुझे इनकी टांगों के पास पटरे रखने पड़ते हैं।
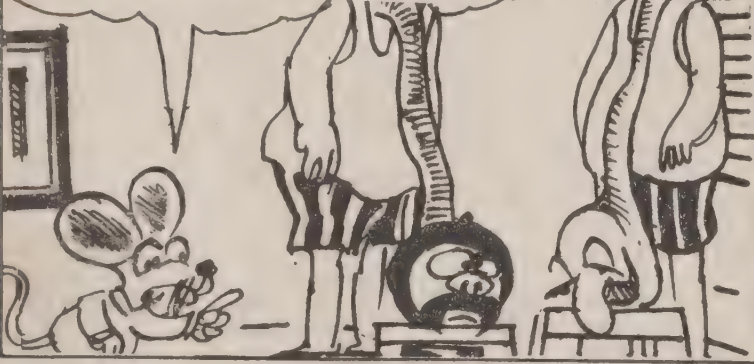
कब तक ऐसा चलेगा। जल्दी ही कोई उपाय न सोचा गया तो इनकी यह हालत परमानैन्ट हो जायेगी, फिर डाक्टर जिवागो भी इनका इलाज नहीं कर सकेगा, इसका इलाज केवल मनोवैज्ञानिक हो सकता है।

पहले म्यूजिक को आजमा कर देखना चाहिए। नागिन फिल्म का गाना लगता है। बीन सुनकर शायद इनकी गर्दनों में हरकत पैदा हो और वह ऊपर उठ जायें।

पीं पीं पीं पीं पीं—
मन डोले मेरा तन
डोले मेरे दिल का
गया करार रे कौन
बजाये बांसुरिया

सिलबिल पर गाने का जबरदस्त असर होता है।

यह तो सचमुच कोबरा बनकर मुझे ही सटकने वाला है। मैं क्यों भूल गया कि मैं एक चूहा हूं? और सांप चूहों को गोल गप्पे समझ कर निगल जाते हैं, हर चीज का इन पर जरूरत से बीस गुना ज्यादा ही असर होता है।
YUMYUM

इनके साथ यही एक सबसे बड़ी समस्या है कि पता ही नहीं लगता दवाई का कितना डोज देना चाहिए। सुपरसेंसटिव सिलबिल को छेड़ने की बजाय मुझे पिलपिल पर मनोवैज्ञानिक इलाज ट्राई करना चाहिए, उसे कोई ऐसी ख़बर देनी चाहिए कि उसकी गर्दन तनकर ऊंची हो जाये।

याड़ी एक तेरे लिए इतनी जबरदस्त खबर लाया हूं कि सुनेगा तो तेरा दिल छिपकली की टूटी पूछ की तरह तड़पने लगेगा। रति अग्निहोत्री ने मुझे लव लैटर लिखा है। लिखती है कि तुझे वह अपने दिल ही दिल में पति मान चुकी है, बाकी बातें सेंसर होने लायक हैं।

ऐह ! यह क्या हो गया ?
इसकी गर्दन इतनी जोर से तन गयी कि खिंच कर मुनीम धागे की तरह हो गयी। धागे के छोर पर इसका सिर पतंग बन कर आसमां की ओर जा रहा है। मुझसे फिर गलती हो गयी। अगर मैं इसे बताता कि शबाना आजमी या सिम्पल कपाड़िया ने लिखा है तो इतना जबरदस्त रियेक्शन नहीं होता। अब क्या होगा ?

किसी के पतंग से पेच लड़ गया और इसकी गर्दन कट गयी। गर्दन का नीचे का भाग और सिर वाला भाग अब एक दूजे के लिये नहीं रहे। बेचारे की जिन्दगी अब कटी पतंग बन गयी।

इसका कटा हुआ सिर तो उठाना चाहिये। कोई उसे मसाला पीसने का बट्टा समझ कर उठा कर घर न ले जाये।

मेरे पास तो इतने पैसे भी नहीं हैं कि इनका इलाज करवाने अमरीका उस डाक्टर के पास ले जाऊं जिसने लोकनायक श्री जयप्रकाश नारायण और राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह का आपरेशन किया था।
अब गाँठ बांधकर इसकी गर्दन जोड़नी पड़ेगी। याड़ी मैंने गांठ इतनी कसकर बांध दी है कि उम्र भर नहीं खुलेगी। जब तेरी गर्दन ठीक इलाज के बाद सिकुड़कर नार्मल साइज की हो जायेगी तो गांठ का थोड़ा सा असर रह जायेगा। साबुत लड्डू गले से नीचे नहीं उतरेगा। किश्तों में भेजना पड़ेगा।

सिलबिल-पिलपिल के नये कारनामे

फलों की टोकरी

यह हुई न बात, मजा आ गया, मिस नरगिस जैन ने चौथी बार कहा। 'काश' वह बुढ़िया और उसके बच्चे मुझे ऐसे देखते।

बुढ़िया से नरगिस का मतलब अपनी बहुत ही ऊंचे दर्जे की आदरणीय, मालकिन श्रीमती नयनतारा साहनी से था, जिन्हें अपनी पारलमेडो के विशेष नाम रखने, बदलने का एक खास मर्ज था, और इसी कारण उन्होंने नरगिस का नाम बदलकर जैन रख दिया था। नरगिस को 'जैन' नाम कतई पसन्द नहीं था।

मिस नरगिस के साथी ने उनकी बातों का कोई तुरन्त जवाब नहीं दिया, वो बेचारे अपनी ही धुन में थे। अब सोचिये, जब तुमने अभी-अभी 1200 रु. में चौथी बार बिकी 'बेबी आस्टिन' कार खरीदी है। और उसे लेकर दूसरी ही बार सड़क पर निकले हो तो भला तुम्हारा पूरा ध्यान अपने दोनों हाथों और पैरों को जरूरत के मुताबिक इस्तेमाल करने में लगा होना स्वभाविक ही है।

'अरे।' कहते हुए मिस्टर अनुज कुमार ने बड़ी तेज पीसने की सी आवाज के साथ कार को मोड़ा, आवाज ऐसी तेज थी कि कोई भी अच्छी ड्राईविंग करने वाला उसे सहन नहीं कर पाता।

'तुम तो साथ बैठी लड़की से बात नहीं करते शिकायत भरे स्वर में नरगिस बोली, अनुज कुमार बात का जवाब देने पाये इससे पहले ही उन पर करीब से जाती एक बस के ड्राइवर ने गालियों की बौछार कर दी, वजह उनकी गलती थी।

'देखो तो, कितना बदतमीज है।' नरगिस ने सिर को झटका देते हुए कहा।

'काश, उसकी बस में यह वाला फुट ब्रेक होता।' उनके साथी ने कड़वाहट के साथ उत्तर दिया।

'इसमें कुछ खराबी है क्या ?'

'तुम इस पर पैर रखकर यहाँ से शहर पहुंच जाओगे, पर कुछ भी नहीं होगा।' अनुज बोला।

'ओह अनुज तुम्हें 1200/- रुपये में इससे ज्यादा और क्या मिल सकता था, आखिर हम असली कार में बैठे हैं और इतवार की दोपहर को और लोगों के समान शहर से बाहर घूमने जा रहे हैं।'

कुछ और अजीब-अजीब आवाजें आती हैं।

'ओह,।' खुश हो अनुज बोला, 'यह अच्छा बदलाव है।'
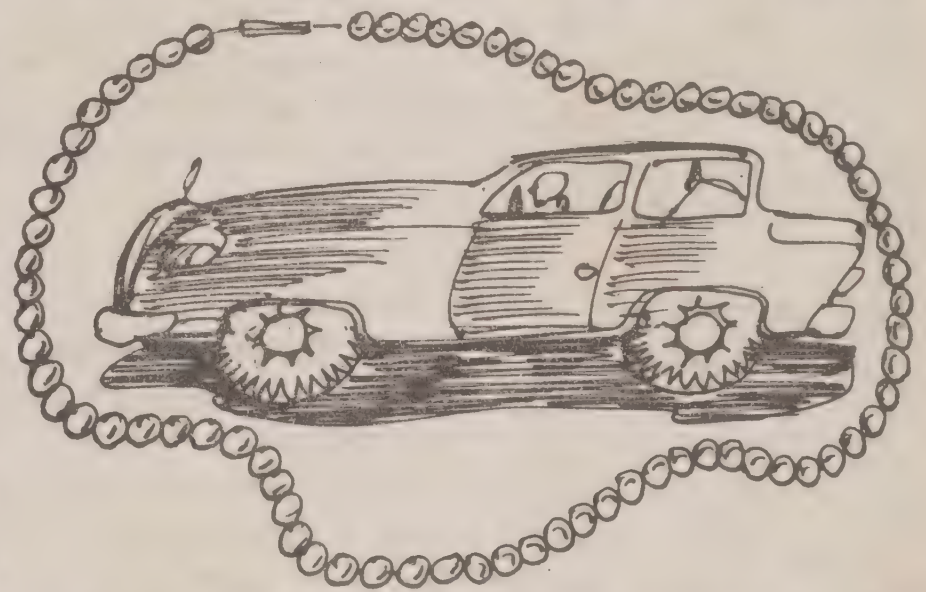
'तुम ड्राईव बहुत अच्छा करते हो', नरगिस ने कहा।

पास बैठी स्त्री की तारीफ से हिम्मत बढ़ जाने पर अनुज ने तेजी से आगे आते चौराहे को पार किया और ऐसा करने पर उसे पुलिस मैन ने अच्छी डाट लगाई।

'ठीक है ? मैं नहीं सोचती थी कि पुलिस वाले इस बुरी तरह बात करते हैं। अभी कुछ दिन पहले ही इन्हें जैसा दिखाया गया है उससे तो कुछ और ही अन्दाज लगता है। यह लोग तो कुछ और तमीज से पेश आ सकते हैं।'

'कुछ भी हो मैं तो इस सड़क से जाना ही नहीं चाहता था, मैं तो रिंग रोड से जाना चाहता था ताकि अपनी कार को कुछ भगा सकूँ।' अनुज बोला।

'ताकि वहाँ तेज कार चलाने पर तुम्हारा चालान हो जाता, कुछ दिन पहले मालिक ने भी ऐसा ही किया था और सौ रुपये का जुर्माना देकर छूटे थे।' नरगिस बोली।

'पुलिस वाले भी कोई गधे थोड़े ही हैं, वे भी समझते हैं अमीरों से कैसे निपटना है। कोई लिहाज नहीं करते।' अनुज बोला, 'मुझे तो इन अमीरों को देख बहुत ही खुन्दक आती है जो कि जब चाहे एक आध मरसोडीज ऐसे खरीद लेते हैं जैसे कोई बात ही नहीं। इसमें कोई अक्ल की बात नहीं है आखिर मुझ में और उन में फर्क क्या है ?'

'और जेवर', नरगिस ने लम्बी साँस लेकर कहा। वो कनाट प्लेस की दुकानें हीरे, मोतियों के जेवरों से भरी पड़ी हैं। उनमें क्या-क्या नहीं हैं और मैं बेचारी यह नकली मोतियों की माला पहने हूं।'

वह उदास मन से इस पर विचार करती रही और अनुज एक बार फिर अपना पूरा ध्यान कार चलाने में लगा सका। वे भीड़ के स्थानों से बिना किसी दुर्घटना के निकलने में सफल हो गये। पुलिस वाले की डांट ने अनुज को घबरा दिया था, अब उसने अपनी तेजी को छोड़ चुपचाप आगे जाती किसी भी कार के पीछे लगे रहने का रास्ता अपना लिया था।

और इस प्रकार वह शहर की एक ऐसी अनजान गुप्त सी सड़क पर पहुंच

गया, जिसे शायद कोई भी मोटर वाला घण्टों ढूंढ़ पाने में सफल न होता।

'म बड़ी सड़क से इधर बड़ी चतुराई से मुड़ गया', अनुज अपने को सराहते हुए बोला।

'बहुत ही प्यारी', मैं तो इसे ऐसा कहूंगी 'और वो देखो इस सड़क पर एक आदमी फल बेच रहा है।'

वाकई सड़क के एक कोने में ठेली पर सुन्दर-सुन्दर छोटी-छोटी टोकरियों में फल रखे एक आदमी खड़ा था। साथ ही एक तख्ती पर 'फलों से सेहत' लिखा हुआ था।

'कितने की है?' अनुज ने हाथ के ब्रेक खींच कार के रुक जाने पर पूछा।

'बहुत बढ़िया स्ट्राबरीं हैं', बेचने वाला आदमी बोला। वह एक बहुत ही मामूली सा आदमी था जिसके चेहरे पर एक मुस्कुराहट ठहरी हुई सी थी।

मेम साहब के बिल्कुल मतलब की चीज है, पके और ताजे फल। चैरीज भी असली इंगलिश हैं, चैरीज की एक टोकरी लो, मेम साहब?'

'अच्छी तो लग रही हैं यह चैरीज' नरगिस बोली।

'अति सुन्दर कहिये', आदमी ने मोटी आवाज में कहा, तुम्हारा भाग्य चमका देगी, यह टोकरी लो, 'आखिर में वह अनुज से बोला।' 2 रुपये की है सर, मिट्टी के भाव, एकदम सस्ती है, आप भी ऐसा ही कहेंगे यदि आपको पता चल जाये कि टोकरी के भीतर क्या है।'

'बहुत ही बढ़िया दिखाई दे रही हैं यह तो' नरगिस बोली। अनुज ने लम्बी सांस ली और दो रुपये निकाल चेरी वाले की तरफ बढ़ाये। उसका दिमाग हिसाब लगाने पर मजबूर हो रहा था। बाद में चाय, पेट्रोल—यह इतवार को कार में घूमना कुछ सस्ता धन्धा नहीं है। लड़कियों को बाहर ले जाने में सबसे बड़ी परेशानी यह है कि उन्हें सड़क पर जो भी दिख जाये खरीदने पर उतारू हो जाती हैं।

अशुभ से दिखाई देने वाले फल वाले ने कहा, 'धन्यवाद जनाव, आपको इस चेरी की टोकरी में अपने पैसों से ज्यादा का माल मिलेगा।'

अनुज ने अपना पैर बेबी आस्टिन के ऐक्सीलेटर पर बहुत ही बेरहमी से दे रखा और कार एक भड़के हुए ऐलसेशियन कुत्ते के समान फल वाले की ओर लपकी।

'क्षमा करना', अनुज बोला, 'मैं भूल ही गया था कि यह गियर में है।'

'तुम्हें ध्यान रखना चाहिए डियर' नरगिस ने कहा, 'उस बेचारे के चोट भी लग सकती थी।'

अनुज ने कोई जवाब नहीं दिया और 2 किलोमीटर जाने के बाद यह लोग नदी के किनारे एक बहुत ही सुन्दर स्थान पर पहुंच गये। आस्टिन को सड़क के किनारे छोड़ नरगिस और अनुज प्यार से नदी के करीब बैठे चेरी खा रहे थे। उनके पैरों के करीब इतवार का पेपर लापरवाही से पड़ा था।

'क्या खबर है?' अनुज ने कमर के बल सीधे लेट और हैट को आंखों पर सरकाते हुए पूछा।

नरगिस ने अखबार की सुर्खियों पर निगाह डाली।

'एक दुखी पत्नी, एक असाधारण कहानी, पिछले सप्ताह अट्ठाईस लोग एक दुर्घटना में डूब गये। एक हवा बाज की मृत्यु। चौंका देने वाली जेवरात की चोरी, पन्नों का एक पांच लाख रुपये का हार गायब। ओह अनुज। पांच लाख रुपये, जरा सोचो।' वह आगे पढ़ती गई 'नैकलेस 21 पत्थरों का बना है जिन्हें प्लेटिनम में जड़ा गया है, और यह पेरिस से रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा भेजा गया था। पहुंचने पर पैकेट में हार के बजाये कुछ पत्थर थे।'

'डाक में गायब कर लिया गया।' अनुज बोला, 'मेरे ख्याल से फ्रांस की डाक सेवा बहुत ही बेकार है।'

'मैं ऐसे नेकलेस को देखना चाहती हूं।' नरगिस बोली, 'सब लाल खून की तरह चमकते हुए—कबूतर के खून की तरह—दूसरे रंग का यही नाम लेते हैं। पता नहीं ऐसी चीज को गले में पहन कर कैसा महसूस होता होगा?'

'पर इस एहसास को पा सकने की

कभी भी कोई उम्मीद नहीं है, मेरी गुड़िया' अनुज ने सफाई से कहा।

नरगिस ने अपना सिर हिलाया।

'क्यों नहीं, मैं जानना चाहता हूं आखिर क्यों नहीं। दुनिया में लड़कियाँ बहुत ही तरक्की करती हैं। शायद मैं भी स्टेज पर काम करने लगूं।'

'जो लड़कियां सीधे रास्ते पर चलती हैं वो कहीं भी नहीं पहुंचती।' अनुज ने निर उत्साहित करते हुए उत्तर दिया।

नरगिस ने जवाब देने को मुंह खोला पर अपने को रोक धीरे से बोली। 'चेरी मुझे देना।'

'मैंने तुमसे ज्यादा खा ली हैं, बाकी बची हुई चेरीज को मैं आधा-आधा बांट देती हूं—अरे। यह क्या है इस टोकरी के तले में?'

बोलते-बोलते उसने टोकरी से वस्तु को बाहर खींच लिया—एक लम्बी चमकती खूनी लाल पत्थरों की माला।

दोनों हैरान हो माला को देखते ही रह गये।

'टोकरी में थी, क्या तुमने यही कहा था?' अनुज ने पूछा, नरगिस ने सिर हिलाया।

'बिल्कुल तले में—फलों के नीचे।' एक बार फिर वे दोनों हैरानी से एक-दूसरे को देखने लगे।

'यह यहां पहुंची कैसे, जरा सोचो तो?'

'मुझे तो कुछ समझ नहीं आ रहा, बहुत अजीब बात है। अनुज—उस अखबार में वह समाचार पढ़ने के तुरन्त बाद—रुबीस की चोरी के विषय में।'

अनुज हंसा।

'तुम कहीं यह तो नहीं सोच रही कि तुम अपने हाथ में पांच लाख रुपये लिये हो, क्या ख्याल है?'

'मैंने तो सिर्फ यह कहा था, कि अजीब बात है।

प्लेटिनम में जड़ी रुबीस, प्लेटिनम वही चांदी जैसा, ऐसा ही कम चमकने वाला होता है, क्या यह चमकदार नहीं है और इनका रंग भी तो देखो, कितना सुन्दर है?'

'पता नहीं यह हैं कितने?' वह गिनती है। 'अरे अनुज पूरे इक्कीस हैं।'

'नहीं!'

'हां, उतने ही जितने अखबार में लिखे हैं, ओह, अनुज कहीं ऐसा तो नहीं है···'

'हो सकता है' पर उसने उत्तर कुछ अनिश्चित आवाज में ही दिया था "कोई तरीका होता तो है इसका पता लगाने का—इन्हें कांच पर रगड़ कर!'

'वह तो हीरों का होता है पर अनुज वह फल वाला आदमी था भी बहुत ही अजीब, एक बार बदमाश सा था, और वह इसके बारे में बातें भी अजीब ही कर रहा था—कह रहा था हमें टोकरी में अपने पैसों से अधिक का माल मिलेगा।'

'हां, नरगिस पर सोचो भला वो हमें पांच लाख रुपये क्यों थमा देगा?'

नरगिस ने निर उत्साहित हो सिर हिलाया।

'कुछ बात समझ में नहीं आती।' वह बोली 'जब तक पुलिस उसके पीछे न पड़ी हो?'

'पुलिस?' अनुज का रंग कुछ पीला सा पड़ गया।

'हां! अखबार में आगे लिखा है, पुलिस को सुराग मिल गया है।'

'अनुज के मन में डर से कंपकंपी उठ गयी!

'मुझे यह सब अच्छा नहीं लग रहा नरगिस, सोचो अगर पुलिस हमारे पीछे पड़ जाये तो?'

नरगिस मुंह बांधे उसे घूरती रही—

'पर अनुज हमने तो कुछ नहीं किया, हमें तो यह इस टोकरी में मिली है।'

'और यह कहानी एक बिलकुल बेसिर, पैर की मालूम होगी, क्योंकि ऐसा होता नहीं।'

'हां होता तो नहीं।' नरगिस ने सहमत होते हुए कहा।

'ओह: अनुज क्या हमारा वास्तव में ख्याल है कि यह 'वही' है। यह तो एक परी कथा जैसी बात है?'

'मेरे ख्याल से यह परी कथा सी नहीं लगती बल्कि उस कहानी जैसी लगती है जिसमें हीरो बिना कसूर के चौदह वर्ष के लिए जेल की हवा खाने

शेष पृष्ठ २५ पर

मदहोश

आतिशबाजी के नये क्रांतिकारी डिजायन

पटाखा ऐसा हो। जिसमें से ढक्कन खोल कर सचमुच का पटाखा निकले ।

सर्कट ऊपर जाकर फटे तो उसमें से भावों की पर्चियां निकल कर नीचे गिरें,बड़ों को भी यह देख मजा आये कि भाव राकेट की तरह किस तरह आसमान की ओर जा रहे हैं ।
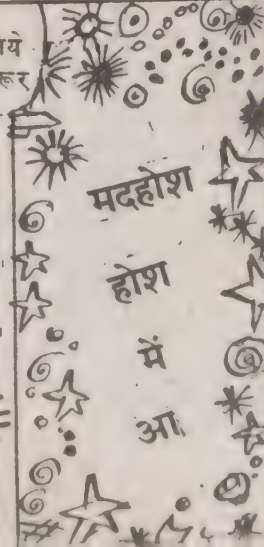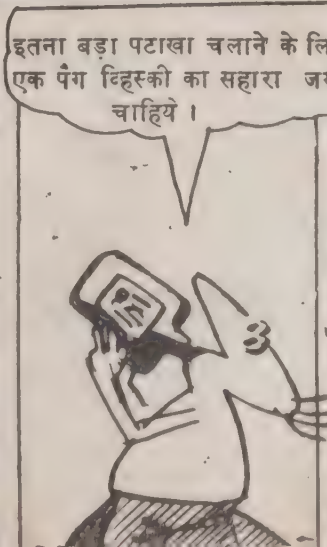
एटम बमों में वाल्यूम कंट्रोल हो। कोई बुजंग आता दिखाई दे या पास में हो तो धीमी आवाज पर चला दिया और किसी लड़की को सुनाने के लिये चला रहे हों तो फुल वाल्यूम पर बम चला दिया

चक्कर जिन्हें लड़कियां स्कर्ट की तरह पहन कर चला सकें । दीवाली का अनूठा फैशनी आनन्द मिलेगा ।

पटाखों की लड़ियां जो फटें न,बल्कि अन्दर से फोम निकले जैसे कपास में से रूई निकलती है । लड़ियां चलाने के बाद उनसे हार का काम किया जा सकेगा ।

सुरसुरी जिन्हें चलाने पर उसमें से रेसीले प्रेम पत्र की पट्टी निकले, जिसे पढ़कर सचमुच ही सुरसुरी होने लगे।
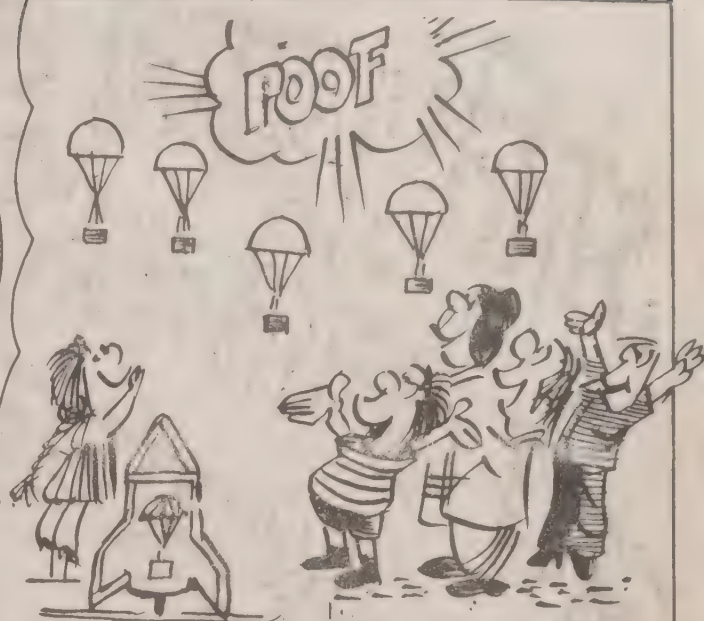
पैराशूट चलाने पर उसमें से कई छोटे-छोटे पैराशूट छूटें जिनके नीचे टॉफियाँ या चिऊइंगम हो। उतरते पैराशूटों पर छीना-झपटी होगी तो सचमुच मजा आयेगा।

राकेटों में वन शाट मिनी कैमरा हो। ऊपर जाकर फटने के साथ ही एक शॉट ले और रील नीचे गिरे। आपको भी पता लगेगा जब आपने राकेट चलाया था तो ऊपर से शहर का क्या नजारा नजर आ रहा था।

अनार जिन्हें पारदर्शी छाते की ऊपरी नोक पर फिट करके चलाया जा सके। अंगारों से बचाव होगा।
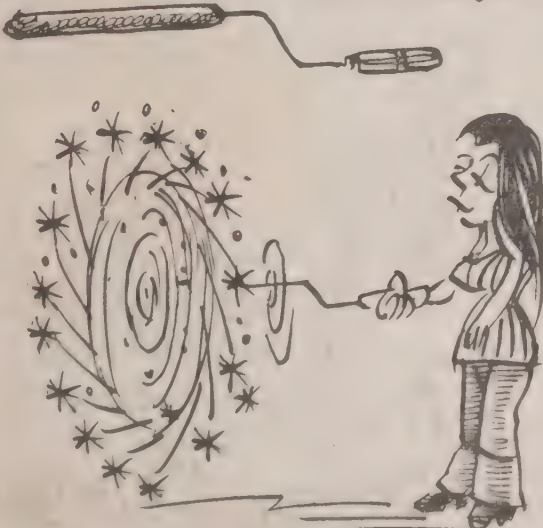
क्रैंक हैंडल वाली फुलझड़ियां आसानी से फुलझड़ी चक्कर में घूम सकेंगी और फुलझड़ी चलाने वाली की कलाई में मोच आने का कोई खतरा नहीं रहेगा।

तेज रोशनी वाला अनार जब जल कर खत्म हो जाता है तो आँखों के सामने अंधेरा छा जाता है। ऐसे अनार बनें जिनमें दो खाने हों, निचले खाने में टार्च की बत्ती व एक सैल फिट हो। अनार का मसाला चुकते ही बल्ब खुद ही ऑन हो जाये।

जब हम तैराक कहलाये

अपने राम भी कुछ मस्त किस्म के आदमी हैं। इधर गर्मियां शुरू हुईं कि तैराकी सीखने का शौक ऐसा सर पर सवार हुआ कि सब कुछ भूल कर इसी में लग गए। इधर तैराकी सीखने का दृढ़ निश्चय किया, उधर हमारे आगे समस्याओं का पिटारा खुलना प्रारम्भ हो गया।

पहले पहल तो बाबूजी ही तैयार नहीं थे क्योंकि वह भी अपने लाल से भली-भांति परिचित थे। और मां का तो हाल ही मत पूछो। बस घर भर में हंगामा मच गया। और तो और, मोहल्ले वालों को भी हमारे इस शौक से शीघ्र ही अवगत करा दिया गया। अब जब कोई भी मुहल्ले का वृद्ध या हमारा कोई मित्र मिलता तो वह हमें यह बताने से नहीं चूकता कि तैराक ही डूबा करते हैं। वैसे तो हम भी दिल के कुछ कमजोर हैं, परन्तु इस शौक ने हमारे दिलो-दिमाग पर पूरी तरह कब्जा कर रखा था। मन किसी प्रकार मानने को तैयार ही नहीं होता कि तैराकी न सीखी जाए। खैर हमने भी जिद्द पकड़ ली। घर में 'भूख-हड़ताल' की स्पष्ट घोषणा कर दी। आखिर हमारी जिद्द के आगे सभी को घुटने टेकने पड़े। हम अपनी इस जीत पर फूले नहीं समा रहे थे।

अगले दिन सुबह जल्दी उठ कर तैराकी सीखने के लिए सभी तैयारी कर लीं। बाबूजी को साथ लेकर पहुंच गए नदी किनारे बने घाटों पर। वहां पहुंचने के पश्चात शीघ्र ही हमें तैरना सिखाने के लिए एक गुरु की नियुक्ति की गई। गुरु जी बाबूजी के पूर्व परिचित थे। वैसे गुरु जी की उम्र करीब साठ के आसपास थी। परन्तु हमें यह देख कर अत्यन्त आश्चर्य हुआ कि उनके गिने चुने बाल अभी भी काले प्रतीत होते थे। शीघ्र ही इस बात की पुष्टि हो गई गुरु जी का खिजाब लगाने का शौक उनके दिल में अभी भी बरकरार था। खैर हमें इन सब बातों में क्या लेना? यही सोच, हमने तैराकी सीखने के लिए सर्वप्रथम लंगोटी कसी। गुरु जी ने स्वयं एक ट्यूब धारण की और हमें बुर्जी पर चढ़ा कर वहां से पानी में कूदने को कहा। वैसे तो हमें डर की कोई बात नहीं होनी चाहिए थी, क्योंकि गुरु जी स्वयं बुर्जी के नीचे ट्यूब धारण किए खड़े थे। परन्तु जैसे ही हमने एक बार बुर्जी से नीचे झांक कर देखा, हमारे सब्र का बांध टूट गया। और दिल ने कूदने से साफ इन्कार कर दिया। यूं तो हम पानी की सतह से दस ही फुट ऊपर थे, परन्तु हम नीचे कूदने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहे थे। दूसरी ओर गुरु जी की सेहत देख कर भी संतोष नहीं हो रहा था। यदि हम कूद भी गए तो गुरु जी हमें बचा भी पाएंगे या नहीं। उधर गुरु जी व बाबूजी निरन्तर कूदने के लिए हमें प्रोत्साहित कर रहे थे। वे शायद हमारा दिल खोलना चाहते थे। परन्तु हमारे मस्तिष्क के विचारों ने हमें दुर्बल बना डाला था। डर था कि कहीं कूदते ही कछुए ने पैर पकड़ लिए तो स्वर्ग पहुंचाए बिना नहीं छोड़ेगा। और फिर हम डूब गए तो——।

हमने अभी जिन्दगी में देखा ही क्या है। अब तक गुरु जी के सब्र का बांध टूट चुका था। वह हमारी इस बुजदिली से क्रुद्ध हो चुके थे। उन्होंने अन्तिम बार जोर से चिल्ला कर कहा तो हमने फैसला किया—जब ओखली में सिर दिया तो मूसल से क्या डर। आखिर मजबूर होकर कूद ही पड़े। जब पानी में नीचे की ओर गए तो लगा कि पता नहीं कौन से जहन्नुम की ओर जा रहे हैं। गुरु जी ने अब तक हमें भली प्रकार पकड़ लिया था। पकड़ में आते ही हमने उलटे सीधे हाथ मारने प्रारम्भ किये। जबकि हमें सीढ़ियों पर लिटा कर निर्देशानुसार हाथ पांव एक साथ चलाने के लिए कहा गया। अब कभी हमारे हाथ चलते तो पांव बन्द और पांव चलते तो हाथ स्वयं बन्द हो जाते थे। हम अपने आपको किसी भी प्रकार हाथ पांव का समन्वय कराने में असमर्थ पा रहे थे। मन ही मन सोच रहे थे कि कौन सी मुसीबत में आकर फंसे। हमारे पहले दिन का अभ्यास समाप्त हुआ। हमने शीघ्र ही कपड़े बदले और बाबू जी को साथ लेकर घर की ओर रवानगी डाल दी।

अब घर पहुंचे तो दिन में हमारे दोस्तों ने हमारे घर पर जम घट लगा दिया। तैराकी के विषय में विभिन्न प्रश्नों की झड़ी लग गई। परन्तु हम भी अपने एक दिन के अनुभव के आधार पर प्रत्येक प्रश्न का उत्तर देते गए। प्रश्नों का उत्तर देते वक्त हम अपने आपको किसी ओलम्पिक चैम्पियन से कम नहीं समझ रहे थे। जोकि हाल ही में रेस में स्वर्ण-पदक जीत कर आया हो और विभिन्न देशों के पत्रकार उससे साक्षात्कार करने में लगे हुए हों। हमारी दोस्तों के बीच धाक जम गई। कुछ दिन इसी प्रकार चले। हम तैराकी किसी भी प्रकार नहीं सीख पा रहे थे। यहां बताना उचित होगा कि यह कमी हमारे गुरु जी की ओर नहीं थी, बल्कि हमारे कमजोर दिल की वजह से थी।

आखिर कुछ दिनों जमीन पर हाथ पांव चलाने के पश्चात ट्यूब धारण किए पानी में उतारा गया और हाथ पांव चलाने के लिए कहा गया। परन्तु हड़बड़ाहट में ट्यूब निकल गई। अब हम थे और पानी ही पानी। हमारे गुरु जी एक दर्शक की भांति हमारी कार्यविधि देख रहे थे। हम कभी नीचे की ओर जाते कभी ऊपर।

मरता क्या न करता

हमने उल्टे सीधे सांस भरने चालू कर दिए! हमें लगा हम जैसे पानी पर तैरने लगे हैं अब तो हाथ-पैर खुशी से और जोरों से चलने लगे! नतीजा यह हुआ किनारे आ लगे! हमारे गुरु जी ने हमें बधाई दी! हमें लगा जैसे हम कोई बहुत बड़ी रेस जीतकर आए हों। और इस प्रकार आखिर हम तैरना ही सीख गए।

●

—धर्मेन्द्र जैन

जुआ चक्रम

(दीवाली ही क्यों न हो)

आप जुआ क्यों नहीं जीत सकते ? कुछ दीवाने कारण
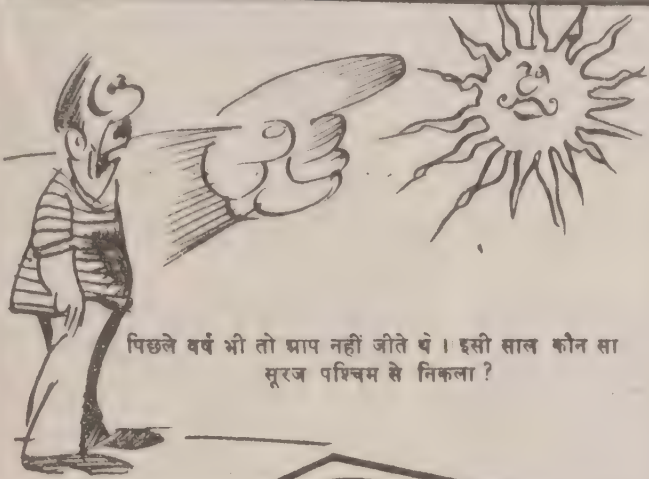
पिछले वर्ष भी तो आप नहीं जीते थे। इसी साल कौन सा सूरज पश्चिम से निकला ?

सुबह काली बिल्ली भी तो आपका रास्ता काट गयी थी। आपने ध्यान नहीं दिया तो हम क्या करें ?

आपको पैसे ही मिलने होते तो सुबह आपकी नजर में वह बटुआ आता जो सड़क पर गिरा पड़ा था। उस वक्त तो तुम तीन इक्कों के ख्याल में खोये आगे निकल गये।

जुआ हेरा फेरी से जीता जाता है। तुम्हारे सब जुआरी साथी पत्ते लगाते हैं। तुम आज तक उन्हें नहीं पकड़ सके तो आज ही क्या पकड़ोगे ?

आपके भाग्य में आज बीवी से झाड़ खाना लिखा है इसी ... जरूर हार कर आओगे ताकि उसे मौका मिले।

गोपी फिल्म में दिलीप कुमार ने कहा था कि ... बुरी और जुये का जीत बुरी। क्योंकि आप ... का अवसर ...

त से नानी
जो अमिताभ विलेन को याद दिलाता है।

फ से फटकार
हीरोइन का अमीर बाप गरीब अमिताभ को देता है।

भ से भूत
जो अमिताभ की फिल्में देखने का लोगों पर सवार है।

प से पिटाई
जो अमिताभ हीरोइन को छेड़ने वालों की करता है।

ब से बदला
जो हर फिल्म में अमिताभ अपने बाप के कातिलों से लेता है।

म से मेज
जिसके कोने से टकरा कर अमिताभ की अंतड़ी कट गई थी।

य से यार
जो यारों का अमिताभ बनता है।

ल से लहू
जो अमिताभ की हर फिल्म में होता है।

स से सर
जो अमिताभ अपने शत्रुओं के पकड़ कर आपस में टकराता है।

र से रेखा
जिसका चक्कर अमिताभ से चला था।

व से वचन
जो अमिताभ हर फिल्म में निभाता है।

ह से • • • • •
जिनका अमिताभ के अंगने में बहुत काम है।

पृष्ठ १७ से आगे

जाता है ।'

पर नरगिस सुन नहीं रही थी उसने नेकलेस को अपने गले में पहन लिया था और अपने बटुये से निकाल एक छोटे शीशे में उसके प्रभाव का निरीक्षण कर रही थी ।

'बिल्कुल वैसी जैसी कोई महारानी पहने ।' वह उल्लासित हो धीरे से बुदबुदायी ।

'मैं विश्वास नहीं कर सकता', अनुज ने जोर देकर कहा 'यह नकली है, यह नकली ही होने चाहिये ।'

'हां, डियर' हो सकता है 'अभी भी अपने को शीशे में निहारती' नरगिस बोली ।

'कुछ भी और होना एक बहुत ही बड़ा इत्तफाक होगा ।'

'कबूतर के खून जैसा' नरगिस फुसफुसायी—

'यह बकवास है, मैं कहता हूं कोरी बकवास है । देखो नरगिस, क्या तुम मेरी बात सुन रही हो या नहीं ?'

नरगिस ने शीशा रख दिया, वह अनुज की ओर मुड़ी उसका एक हाथ अभी भी रुबीस पर ही था ।

'मैं कैसी लगती हूं ?' उसने पूछा ।

अनुज ने उसे गौर से देखा अपनी कड़ुवाहट को भूल गया था, उसने पहले कभी नरगिस को ऐसे नहीं देखा था ।

वह उल्लासित थी, एक राज सी सुन्दरता जो अनुज के लिए कतई नई थी । इस बात का विश्वास उसके गले में पांच लाख रुपये की माला सुशोभित है, नरगिस जैन को पूर्णतया बदले थी । वह एक अक्खड़ शान्त तरह की नई स्त्री दिखाई दे रही थी एक प्रकार की किलोपाट्रा, सेमिरमिस और जिनोबिया तीनों एक में ही समाई हुई ।

'तुम तो गजब की सुन्दर लग रही हो ।' अनुज ने विनम्रता से कहा । नरगिस हंस पड़ी पर उसकी हंसी में भी एक अजीब ठाठ झलक रहा था ।

'सुनो', अनुज 'बोला हमें कुछ करना जरूर पड़ेगा, हमें इस माला को पुलिस स्टेशन पहुंचाना पड़ेगा या फिर कुछ और करना होगा ।'

'फिजूल बात है ।' नरगिस बोली 'तुम ही तो कह रहे थे अभी कि तुम्हारी बात पर कोई विश्वास नहीं करेगा, और शायद तुम्हें इनकी चोरी के इल्जाम में जेल भेज दिया जाये ।'

'पर-पर हम और कर भी क्या सकते हैं ?'

'रख लेते हैं' नई नरगिस जैन शान से बोली ।

अनुज उसकी ओर देखता ही रह गया ।

'रख लेते हैं तुम तो पागल हो गई हो ।'

'यह हमें मिले हैं, ठीक है न ? हम क्यों सोचें की यह कीमती हैं, हम इन्हें रख लेते हैं और मैं इन्हें पहनूंगी ।'

'और पुलिस तुम्हें पकड़ लेगी ।'

नरगिस ने इस पर एक-दो क्षण तक बिचार किया—

'ठीक है, फिर हम इन्हें बेच देते हैं ।' वह बोली 'तुम एक या दो रोल्स रायस खरीद लो, और मैं अपने सिर पर पहनने की एक हीरे की चीज और कुछ अंगुठियाँ खरीद लेती हूं ।'

'अनुज फिर भी नरगिस को घूरता ही रहा ।

और नरगिस बेचैन हो उठी—

'अब तुम्हारा मौका है—अब मौके का फायदा उठाना तुम पर है । हमने इन्हें चुराया तो है नहीं—मैं इसे मानती नहीं । यह हमारे पास आई है और शायद हमारे जीवन का एक ही मौका है जब हम अपनी जरूरत की सारी चीजें खरीद सकते हैं, क्या तुम में बिल्कुल भी हिम्मत नहीं है मिस्टर अनुज कुमार ?'

'बेच दूँ इसे, तुम्हारा मतलब है ? यह इतना आसान नहीं है कोई भी जौहरी जानना चाहेगा मुझे इतनी कीमती चीज कहां से मिली ?'

'तुम इसे जौहरी के पास थोड़े ही ले जाओगे, अनुज तुम कभी जासूसी कहानियां नहीं पढ़ते ? तुम इसे किसी तस्कर के पास ले जाओगे ।'

'और मैं किसी तस्कर को कैसे जानूंगा ? मैं तो अच्छे घर का हूं, और इज्जत से पला हूं ।'

'आदमियों को सब कुछ मालूम होना चाहिये ।' नरगिस बोली 'वे इसीलिए होते हैं ।

उसने नरगिस की ओर देखा, वह दृढ़ और अपने इरादे की पक्की थी ।

'मुझे तुमसे ऐसी आशा नहीं थी' उसने कमजोर पड़ते हुए कहा ।

'मैं समझती थी तुममें ज्यादा हिम्मत है ।'

कुछ देर बाद नरगिस उठ खड़ी हुई ।

'अच्छा ।' वह बोली 'सबसे अच्छा यह होगा कि हम अब घर ही चलें ।'

'यह चीज गले में पहने-पहने ?

नरगिस ने नेकलेस को गले से उतारा उसे आदरपूर्वक देखा और अपने बटुये में डाल दिया ।

'देखो नरगिस, वो नेकलेस मुझे दे दो : अनुज बोला ।

'नहीं ।'

'हां, मुझे दो तुम्हें मालूम है मैं एक ईमानदार परिवार में बढ़ा हूं ।

'ठीक है, तुम ईमानदार बने रहो, तुम्हें इससे कोई सरोकार नहीं ।'

'ओह, दो मुझे' अनुज ने जोर से कहा 'मैं वही करूंगा, मैं एक तस्कर ढूंढूंगा क्योंकि तुम्हारे मुताबिक हमारे जीवन में फिर ऐसा मौका आने वाला नहीं है । हमें तो यह ईमान से मिला है—खरीदा है हमने दो रुपये में, ऐसा करने में कोई बुराई नहीं है, पुरातन वस्तुओं के विक्रेता भी अपनी दुकानों में जीवन भर गर्व से यही करते हैं ।'

'यह हुई न बात ।' नरगिस बोली 'ओह, अनुज तुम ग्रेट हो ।'

उसने नेकलेस अनुज को दे दिया उसने उसे अपनी जेब में रख लिया उसे बहुत ही थकान महसूस हो रही परेशान सा भी था साथ ही उत्तेजित हो गया था, ऐसे ही मूड में उसने अपनी बेबी आस्टिन को स्टार्ट किया । [illegible] ही इतने अधिक उत्तेजित हो [illegible] थे उन्हें चाय का होश ही नहीं आया । चुपचाप वापिस शहर पहुंचे राह एक बार एक पुलिसमैन कार की अ

शेष पृष्ठ ३१ पर

दीवाली का खर्चा कम कैसे हो? कुछ अचूक फार्मूले
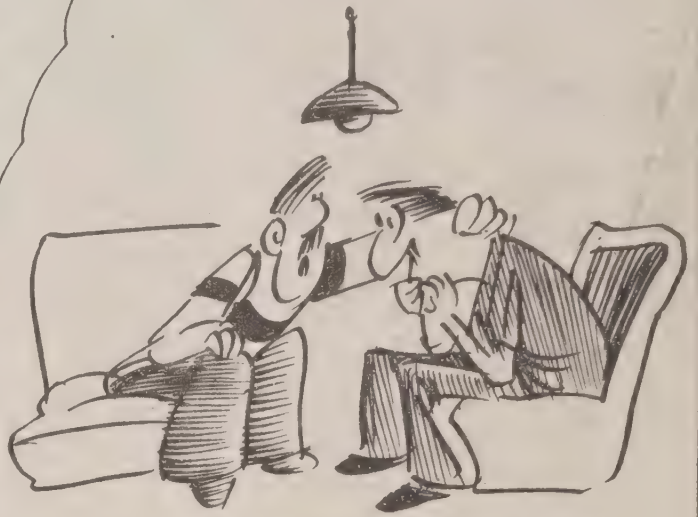
आपका घर गांव में है तो झूठमूठ कह दें कि गांव में आपकी नानी मर गयी है इसलिये आप इस वर्ष गांव के रिवाज के अनुसार दीवाली नहीं मनायेंगे।
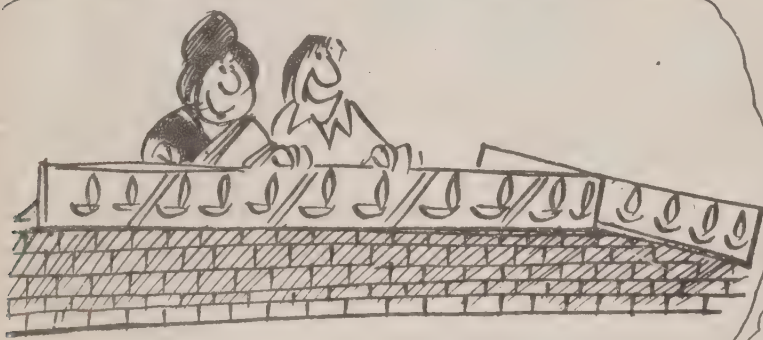
अपनी दीवारों पर लम्बे शीशे लगालें, पड़ौसियों की बत्तियों का बिम्ब उसमें पड़ेगा और लगेगा जैसे आपकी दीवार पर ही दीप जले हैं। मोमबत्तियों का खर्चा कम होगा।

बोर्ड लगा लें कि आपको शुगर की बीमारी है। घर में मिठाई नहीं आयेगी, मिठाई के डिब्बों के लेन-देन का खर्च कम होगा

पटाखों की आवाज टेप कर रखें। दीवाली के रोज पिछवाड़े में फुलवाल्यूम पर वह टेप बजायें। पड़ोसी यही समझेंगे जोरदार दीवाली मन रही है।

दीवाली के पहले रोज पड़ौस के बच्चों को बुलाकर चाय व बिस्कुट खिलायें। दीवाली के रोज बच्चों को पट्टी पढ़ाकर पड़ौसी के घर भेज दें उनके बच्चों के साथ आपके बच्चे भी आतिशबाजी का मजा ले लेंगे, पैसे भी खर्च नहीं हुये।

घर में सबको दीवाली पर नये-नये कपड़े लेकर देने का वादा करें। दीवाली को एक पंडित को दस रुपये पकड़ा कर घर लायें जो झूठी घोषणा करेगा कि इस बार घर में नया कपड़ा आने पर घोर अनिष्ठ होगा।

दीवाली पर बीवी नये-नये बर्तनों की फरमाइश करे तो यहां भी वही फार्मूला आजमायें। पंडित जी ने कहा है इस वर्ष घर में धातु की चीज आने पर सर्वनाश होगा।

कबाड़ी बाजार से खाकी कपड़े खरीदें, उन्हें पहन कर किसी दूसरी कालोनी में तार वाला बन कर दीवाली की बख्शीश मांगने जायें। किसी को पता भी नहीं लगेगा और कमाई भी होगी।

दीवाली के आसपास आतिशबाजी की फैक्ट्रियों में आग लगती ही रहती है। ऐसी खबर पढ़ते ही आंखों में थूक लगा कर झूठ-मूठ रोने लगें कि उस फैक्ट्री में आपका बचपन का जिग्री दोस्त काम करता था और भरे गले से ऐलान करें कि उस दोस्त की पावन स्मृति में इस वर्ष घर में पटाखे वगैहरा बिल्कुल नहीं चलेंगे।

उल्लुओं की आदतों पर रिसर्च करने का ढोंग करें। दीवाली की अमावस की रात निकट के पार्क में बितायें। बहाना यह होगा कि रिसर्च वर्क का ऐसा समा फिर नहीं आयेगा। आप घर पर ही नहीं होंगे तो खर्च भी नहीं होगा।

आपके दोस्त जुआरी हैं और हर दीवाली पर आपको लूटते हैं तो दीवाली से पहले 'ताश में हेरा फेरी कैसे की जाती है" विषय की किताब अपने मित्रों को दिखा कर पढ़ा करें। सब चौकन्ने हो जायेंगे और आपके साथ इस बार कोई ताश नहीं खेलेगा।

प्र० : तरह-तरह के हीरे, जवाहरात को कहां ढूंढा जा सकता है ?

उ० : हीरे, जवाहरात या कीमती पत्थर ऐसे खनिज हैं जो सौंदर्य के लिये पहने जाते हैं और यह चट्टानों में पाये जाते हैं। चट्टानें तीन प्रकार की होती हैं। अग्निमय या आग्नेय चट्टानें बारीक तत्व की या खुरदरे तत्व की होती हैं, एक पॅगमेटाईट कहलाने वाली विशेष खुरदरे तत्व से बनी चट्टान हीरों जैसे खनिज जवाहरात की महत्वपूर्ण स्रोत है। जवाहरात ग्रेनाईट और ओबसिडियन आग्नेय चट्टानों के भीतर खोखले स्थानों में भी पाये जाते हैं।

तलछटी चट्टानें कई परतों से बनी चट्टानें होती हैं और उसी कारण दूधिया और फिरोजे के अतिरिक्त बहुत ही कम जवाहरात इनमें पाये जाते हैं। वैसे जब मूल चट्टान में भारी खनिज होते हैं—और जवाहरात खनिज भारी होते हैं तब इनकी कंकरें बह कर नंदियों की तह में भी पहुंच जातीहैं।अपर बर्मा के 'ब्योर' में ऐसे ही जवाहरात की कंकरीट है इसी प्रकार श्री लंका में 'इलाय, भी इसी प्रकार की कंकरीट को कहते हैं।

तीसरे प्रकार की चट्टानें होती हैं, परिवर्तित चट्टानें। यह वे चट्टानें हैं जो दबाव के कारण बदल जाती हैं—इन चट्टानों में बहुत जवाहरात पाये जाते हैं, जैसे बर्मा में पाई जाने वाली 'रुबी' या 'चुन्नी'।

इनके अतिरिक्त कुछ कीमती तत्व पशुओं से भी उत्पन्न होते हैं जैसे—सीपी से मोती, हाथी से हाथी दांत और समुद्र में पाने जाने वाले नन्हें जीवों से 'मूंगे' यह जीव भी 'कोरल' ही कहलाते हैं जो मूंगे का इंगलिश नाम है। इसके अलावा ऐम्बर और जेट भी होते हैं यह मूल्यवान तत्व वनस्पतियों की देन हैं। ऐम्बर कोनिफरस वृक्ष का सूखा हुआ गोंद सा होता है, यह वृक्ष इओसीन युग में उगता था।जेट एक प्रकार की पुरानी लकड़ी होती है।

जवाहरात सारे संसार में पाये जाते हैं इनकी कीमत कम उपलब्धि तथा सुन्दरता से आंकी जाती है। इनका आकर्षण इनकी पारदर्शकता तथा गहरे रंग पर निर्भर होता है। जैसे रुबी और पन्ना सुन्दर रंग के फिरोजा सिर्फ सुन्दर रंग से, हीरा चमक और शुद्धता के लिये, और ओपल रंगों के लिये कीमती हो जाता है।

प्र० : तितली और मौथ के परों पर पाउडर जैसा तत्व क्यों होता है ?

उ० : तितली और मौथ के परों पर का पाउडर वास्तव में नन्हें रंगीन स्केलस की तह होती है जो एक दूसरे को ढके रहते हैं, करीब-करीब उसी ढंग से जैसे छत पर लगे टाईलस एक दूसरे को ढकते हैं। यदि हम तितली के पर को छूएं तो पाउडर उंगली पर आ जाता है और तितली का पंख लगभग पारदर्शी और रंगहीन हो जाता है।

स्केलस साधारणतया हाथ के समान कलाई पर पतले होते जाते जैसे होते हैं और इनमें गहरी आड़ी तिरछी धारियां होती हैं। वास्तव में ये खोखले थैले से होते हैं जो पंख की बाहरी झिल्ली से उगे होते हैं।

या तो इनमें कोई रंगीन तत्व भरा होता है या इनमें इतनी बारीक धारियां होती हैं कि उन पर पड़ा प्रकाश तरह-तरह के रंग में चमकता है, हालांकि इनमें कोई पिगमैंट नहीं होता। ब्राउन, लाल, पीले, सफ़ेद और काले स्केलों में पिगमैंट होता है। नीले और हरे रंग प्रकाश से चमकते हैं।

बहुत से नर तितली और मौथ (Moth) के विषेश सुगन्धित स्केलस होते हैं इनका आकार भी खास तरह का होता है। यह लम्बे और पर के समान या फिर चौड़े और बल्ले के समान होते हैं इन्हें एन्ड्रोकोनिया कहा जाता है। इनमें मादा तितली को आकर्षित करने के लिये विशेष सुगन्ध फैलाने वाली ग्रन्थी होती है।

मौथ बिजली पर उसे चन्द्रमा का प्रकाश समझ कर आकर्षित होते हैं। यह अपनी राह पता लगाने के लिये चन्द्रमा के प्रकाश का प्रयोग करते हैं। यह दूसरी बत्तियाँ मौथ को गड़बड़ा देती हैं जिससे वे अपनी राह भूल जाते हैं।

प्र : बिजली के बल्ब का आविष्कार कब और कैसे हुआ ? बल्ब रोशनी कैसे देता है ?

उ : बिजली का बल्ब प्रकाश इस लिये देता है क्योंकि उस फिलामेंट से विद्युत तरंगें बहती हैं, फिलामेंट टुंगस्टेन धातु का मनुष्य के बाल से भी बारीक धातु धागा होता है जो करंट पास होने से गरम हो कर सफेद हो जाता है।

इंगलैंड में सर जोसफस्वान (१८२८-१९१४) ने तथा अमरीका में थोमस एलवा-ऐडीसन (१८४७-१९३१) ने सन् १८७९ में पहले तापदीप्त विद्युत लेम्प का निर्माण किया था। वे फिलामेंट को शीघ्र जलने से बचाने में उसे ओक्सीडाइज कर सफल हो गये, फिर भी फिलामेन्ट बनाने के लिये उपयुक्त धातु के चुनाव की समस्या उनके लिये बनी रही।

ऐडीसन प्रयोग शाला में बैठे हवारहित बल्ब में धागे के फिलेमेन्ट को जल कर चमकता देख रहे थे वे इस अवस्था में लगातार ४० घंटे बैठे देखते रहे। परन्तु सूती धागा विद्युत करंट की गर्मी सह पाने के लिये बहुत ही नाजुक था। एक ऐसी धातु की आवश्यकता थी जो गर्मी सहन कर सके क्योंकि फिलामेंट जितना अधिक गर्म, लेम्प का प्रकाश उतरना ही अधिक होता था।

परन्तु आज भी टुंगस्टन के प्रयोग में भी यह समस्या बनी हुई है क्योंकि फिलामेंट को जितना ही ज्यादा गर्म किया जाता है उतनी ही जल्दी फिलामेंट जल जाता है। इस समस्या का समाधान करने के लिये गैस डिसचार्ज लेम्प बनाये गये।

यह कांच की सोडियम या मरकरी वेपर या नियोन गेस से भरी टयूब होती है। टयूब के दोनों सिरों पर इलैक्ट्रोड या कोनट्रेकट लगे होते हैं। जब विद्युत करंट एक इलैक्ट्रोड पर लगाया जाता है तो यह गैस से होता हुआ दूसरे कोनटेकट को जाता है इससे गैस चमकने लगती है और प्रकाश देती है।

क्यों और कैसे ?
दीवाना पाक्षिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२
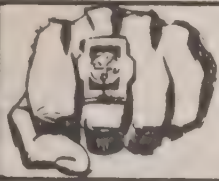
फैण्टम- गुमनाम कमाण्डर
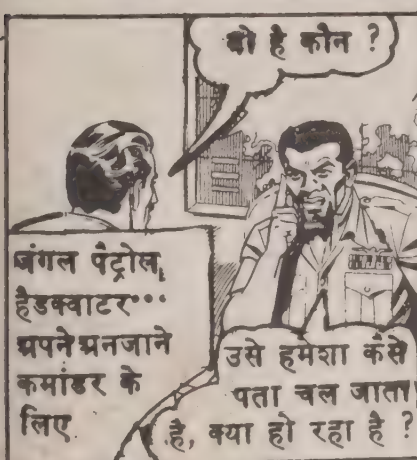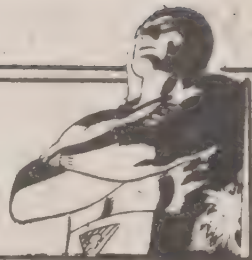
फैन्टम प्रदेश कहलाने वाले घने जंगलों में शान्ति है, कोई अपराध नहीं है।

ऐसा कहा जाता है कि हीरों से लदी महिला आधी रात को भी निडर जंगल से जा सकती है।

वह अभी भी जीवित है, इसे खत्म कर दो, ताकि वह बता न सके ।
!
नहीं !

उसे मारने की क्या जरूरत है, वह बेहोश है और उसने हमें देखा भी नहीं है ।
हो सकता है उसने हमें देख लिया हो, या फिर वह बन रहा हो···
!!
उस लड़के ने हमें देखा है !
नहीं, ललोनी बहुत देर हो गई, वह भाग गया, हम यहां से भाग चलें !

तुमने लुटेरों को देखा था ?
नहीं, सरकार ! उन डरपोकों ने पीछे से हमला किया था !
वह ललोनी ही था ?
हां, सरकार !
इसका जिक्र किसी से भी मत करना ।
जंगल को छान मारो मेरे बड़े लड़के ललोनी को ढूंढो !
ऐसा ही होगा, सरकार ।
ललोन्टो ललोन्गो का राजा ।
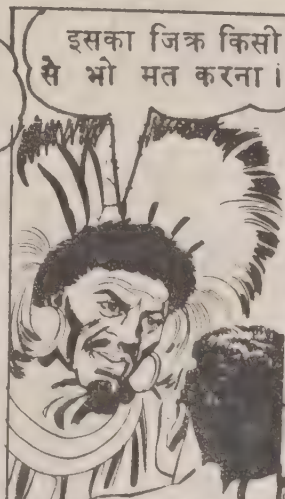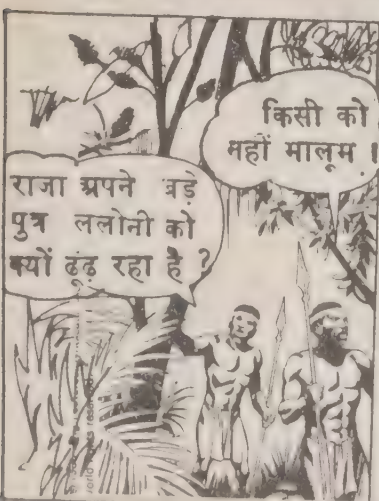
राजा अपने बड़े पुत्र ललोनी को क्यों ढूंढ़ रहा है ?
किसी को नहीं मालूम !
हमने दूर पास सब जगह छान मारी पर ललोनी का कहीं पता नहीं सरकार, क्या आपको उसकी चिन्ता है ?
नहीं ।
बोलते ढोलों पर एक संदेश भेजो, ललोन्टो आफ ललोन्गो फैन्टम को बुलाते हैं······
ललोन्गो के ललोन्टो फैन्टम को बुलाते हैं ।
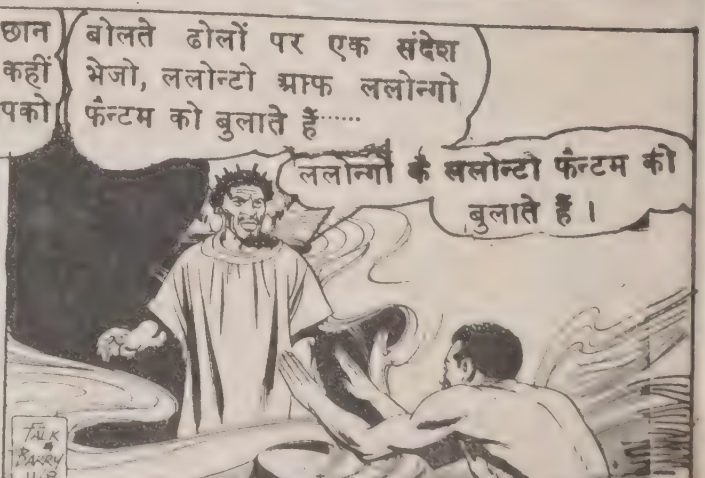
पृष्ठ २५ से आगे

बढ़ा था तो अनुज की जान पर बन आई थी। किसी चमत्कार से ही वे बिना किसी दुर्घटना घटे वापिस घर पहुंच गये।

अनुज के नरगिस से आखिरी शब्दों में साहस का पुट था।

'हम यह जोखिम उठा लेंगे, पांच लाख रुपये। यह जोखिम उठाने लायक हैं।'

रात को उसने स्वप्न में जेल के बड़े-बड़े लोहे के दरवाजे और बन्द कोठरियां देखीं जिनकी वजह से वह सुबह को जल्दी ही परेशान और थका मांदा उठ बैठा। उसे अब किसी तस्कर की तलाश करनी होगी--पर ऐसा किया कैसे जाये इस विषय का उसे जरा भी पता नहीं था।

दफ्तर में उसका काम भी ठीक से नहीं हो पा रहा था जिसके कारण लंच से पहले ही उसे दो बार करारी डांट पड़ चुकी थी।

'तस्कर का पता कहां से लगाऊं, मोहन नगर ठीक जगह होगी या आजादपुर? उसके दफ्तर वापिस आने पर उसके लिए एक फोन आया। 'तुम बोल रहे हो अनुज?' हां मैं फोन का इस्तेमाल कर रहा हूं पर किसी भी क्षण उसके अन्दर आने पर मुझे रुकना पड़ेगा। अनुज तुमने अभी कुछ किया तो नहीं, बोलो?

अनुज ने नकारात्मक उत्तर दिया।

'अच्छा, सुनो अनुज, तुम्हें कुछ भी नहीं करना चाहिए, मैं सारी रात जागती रही, बहुत ही बुरी रात थी, बराबर ही सोचती रही कि गीता में उपदेश है चोरी करना पाप है। कल शायद मेरा दिमाग खराब हो गया था, सच कह रही हूं! तुम कुछ भी न करना, सुन रहे हो ना, कुछ भी न करना अनुज।'

क्या अनुज को यह सुनकर राहत महसूस हुई? शायद हां, पर वह इसे मानेगा नहीं।

'जब मैं कहता हूं मैं फलां काम कर रहा हूं, मै उसे कर ही रहा होता हूं, समझे!' उसने एक बहुत ही बहादुर शील की आंखों वाले सुपरमैन के स्वर में उत्तर दिया।

'ओह, पर प्रिय अनुज, तुम्हें करना नहीं चाहिए, ओह प्रभु वह आ रही है। देखो अनुज वह आज रात को डिनर के लिए जा रही है, मैं बाहर खिसक कर तुम से मिल सकती हूं। जब तक तुम मुझ से मिल न लो, तब तक कुछ न करना। आठ बजे, कोने पर मेरी इन्तजार करना।' उसकी आवाज एक फुसफुसाहट में बदल गई थी। 'हां, मैडम मेरे ख्याल से गलत नम्बर था, उन्हें 23456 चाहिये था।'

जैसे ही अनुज शाम को दफ्तर से बाहर निकला, अखबार की एक बड़ी सुर्खी पर उसकी निगाह पड़ी।

जेवरात की चोरी—ताजी जानकारी, जल्दी से उसने एक चवन्नी बढ़ाई और सुरक्षित ट्रेन में चढ़कर धक्कम-धक्का कर एक सीट ले ली। वह बेचैनी से छुपे हुए कागज पर निगाह दौड़ा रहा था शीघ्र ही उसे मनचाही खबर दिखाई दे गई।

उसके मुंह से एक दबी सीटी की आवाज निकली।

'अच्छा—मैं—'

और फिर उसका ध्यान बराबर के पेरा ग्राफ की ओर गया उसने उसे पूरा पढ़ा और अखबार को लापरवाही से हाथ से नीचे गिर जाने दिया।

ठीक आठ बजे वह निर्धारित स्थान पर प्रतीक्षा कर रहा था एक बदहवास नरगिस कुछ पीली सी पर सुन्दर दिखाई देती हुई उसकी ओर आई।

'तुमने कुछ किया तो नहीं, अनुज?'

'मैंने कुछ नहीं किया।' उसने रुबी की चेन अपनी जेब से निकाल नरगिस की ओर बढ़ाते हुए कहा 'तुम इसे पहन सकती हो।'

'पर अनुज—'

'पुलिस को रुबी मिल गई हैं—साथ ही वो आदमी जिसने उन्हें चुराया था पकड़ लिया गया है। अब तुम इसे पढ़ो।'

उसने समाचार पत्र का वह पैरा ग्राफ उसकी नाक के नीचे ठूंस दिया---नरगिस ने पढ़ा---

विज्ञापन का नया स्टंट

एक बहुत ही चतुर विज्ञापन का तरीका विज्ञापन कर्ता फर्म 'पांच रुपये के बदले' अपनाया है यह फर्म पुरानी विज्ञापन कर्ता 'वूलबर्थ' को चैलेंज करना चाहते हैं। कल फलों की टोकरियां बेची गई और हर इतवार को बेची जायेंगी। हर पचास टोकरियों में से एक में रंग-बिरंगे नकली पत्थरों का एक नेकलेस होगा। यह नेकलेस फलों के पैसों के बदले बहुत अच्छी वस्तु है इनसे कल काफी उत्साह और मनोरंजन फैला रहा और 'फलों से सेहत' वालों को अगले इतवार खूब मांग रहेगी। हम 'पांच रुपये के बदले' फर्म को उनकी चतुराई पर बधाई देते हैं और उनमें स्वदेशी वस्तुयें खरीदने के अभियान की सफलता की कामना करते हैं।

'ठीक'—नरगिस बोली।

कुछ देर बाद फिर बोली 'ठीक!'

'हां।' अनुज बोला 'मुझे भी ऐसा ही लगा था।'

जाते-जाते एक आदमी एक कागज उसे थमा गया।

'भाई एक ले लो', वह बोला।

'शालीन स्त्री का मूल्य रुबीयों से कहीं अधिक है।'

'यह लो!' अनुज बोला 'आशा है इससे तुम खुश हो गई होगी।'

मुझे नहीं मालूम नरगिस ने अनिश्चित लहजे में कहा वास्तव में मैं एक अच्छी औरत के समान दिखाना नहीं चाहती।

नरगिस हंस पड़ी।

'अनुज तुम बहुत ही प्यारे हो', वह बोली 'चलो पिक्चर देखने चलते हैं।'

समाप्त
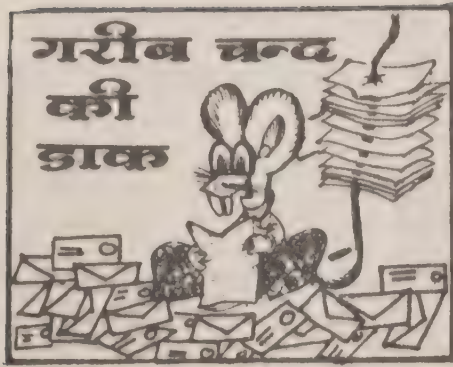
नागेन्द्र सिंह ठाकुर, हिसार : प्रिय गरीब चन्द जी कहा जाता है कि असफलता सफलता की सीढ़ी है लेकिन अगर असफलता ही असफलता मिले तब क्या किया जा सकता है ।

उ० : उसका जश्न मनाना चाहिए । पच्चीसवीं असफलता पर सिलवर, जुबली, पचासवी पर गोल्डन और आगे डायमन्ड जुबली फिर प्लैटिनम जुबली । सफलता किसी न किसी पार्टी में जरूर आयेगी ।

रवि भाटिया, शंकर रोड : गरीब चन्द जी, आपके कितने बच्चे हैं ?

उ० : मैं तो आप सबको अपना ही बच्चा समझता हूं ।

रामदेव मुन्डा, बेरमो : गरीब चन्द जी, आपका अमीरों से पाला पड़ा है कि नहीं ।

उ० : हमें अमीरों से क्यों पाला पड़ने लगा ! अमीरों को हमसे पाला पड़ता है क्योंकि उनके गोदामों ने ही हमें पाला है और हमारी कृपा से ही उनकी मुनाफा खोरी को पाला मार जाता है ।

शिवमोहन परनामी, (राजू) बाई का बगीचा जबलपुर (म० प्र०) : 'गरीब चन्द जी, आप क्या खाते हैं ।

उ० : हम तो राम, नाम जपते हैं और पराया माल खाते हैं ।
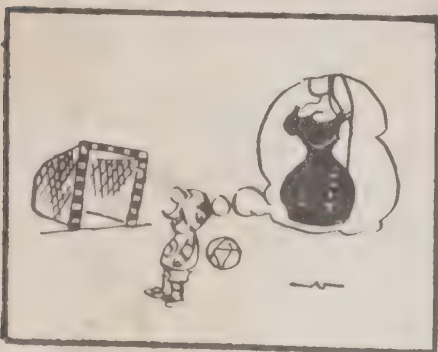
नरेन्द्र गुलाटी, लुधियाना : गरीब चन्द जी । अमीर आदमी के पास अपार धन होने के बावजूद भी अपने आपको गरीब क्यों कहता है ।

उ० : सम्पत्ति कर और आयकर वालों के डर से ।

एम. एस. गुजराल, माडल टाऊन करनाल : प्यारे गरीब चन्द जी वह कौन सी वस्तु है जो आपके पास नहीं है ?

उ० : मेरी क्या पूछते हो भाई दुनिया में अब तक कोई डिपार्टमैन्टल स्टोर या म्यूजियम ऐसा नहीं है जहां सारी वस्तुयें हों ।

रवि भाटिया, शंकर रोड मार्किट : गरीब चन्द जी, मैं बहुत गरीब हो गया हूं, बताइये क्या करूं ?

उ० : जब आप बहुत गरीब हो गये हैं तो अब करने के लिए रह ही क्या गया है । आप अमीर होते तो हम बताते भी कि पैसों का क्या करना है ।

प्रेम बाबू शर्मा, बगीची पीरजी : प्रेमी, प्रेमिका को कब धोखा देता है ?

उ० : जब प्रेमिका शादी के लिए जोर डालने लगती है ।

रमेश जोड्डी शान्ति नगर, बम्बई :

गरीब चन्द जी आपकी बीबी, चूहा है या इन्सान है ?

उ० : दोनों ही है । मैं गुस्से में उसे देखता हूं तो चूहिया नजर आती है प्यार के मूड में देखता हूं तो पूनम ढिल्लों नजर आती है ।

योगेश त्रिवेदी 'समीर' (राजकोट) : गरीब चन्द जी, आपके बस दो ही दाँत क्यों है ? क्या किसी लड़की के सैंडल ने सब झाड़ दिये ?

उ० : लड़कियों के सैंडल कुतरते-कुतरते घिस गये ।

शन्टी—अम्बाला (हरियाणा) : गरीब चन्द जी, क्या आप बता सकते हैं कि आपकी आयु कितनी है ?

उ० : मेरी उम्र बहुत लम्बी है जब याद करोगे तुम्हारे आस-पास तुम्ह... कुछ कुतराता हुआ मिल जाऊंगा ।

अशोक जौहर—मोती बाजार देहरादू... : आप हमेशा अन्धेरे में ही क्यों शिक... करते हैं ।

उ० : टार्च खरीदने के लिए हमारे प... पैसे ही नहीं होते ।

मुरलीधर बजाज, बिलासपुर : ... हुये पैसे को मनुष्य उठा लेता है... मगर गिरे हुये मनुष्य को मनुष्य क... नहीं उठाता है ?

उ० : गिरे हुये पैसे उठाने में सम... नहीं लगता । गिरे हुये मनुष्य को उठा... के लिए काफी समय चाहिए । आजक... इतना फालतू टाइम किसी के पास न... है ।

विनोद कुमार यादव, सितारगंज (...प्र.) : गरीब चन्द जी, मोहन की राध... है, राम की सीता और मंजनू की लैल... है । तो आपकी ?

उ० : सबकी भाभी ।

रवि भाटिया, शंकर रोड मार्किट : इन्सान को कितनी शादियां करन... चाहिएं ।

उ० : जितने बेलन खाने की सिर... ताकत हो ।

हरविन्दर एस. मंगे, डोंगरगढ़ : दुनि... में कौन सी चीज दुबारा नहीं मिलती...

उ० : पहला अवसर ।

विनोद कुमार 'आजाद' कपड़ा पट्... (धनबाद) : मैं एक लड़की से बेह... प्यार करता हूं । लेकिन वह नहीं करत... हालांकि वह भीतर मन से चाहती... बताइये मैं क्या करूं ?

उ०: यही कल्पना करके दिल को बहला... जाओ कि वह भीतर मन से चाहती है...

मनजीत राय तनेजा, गिदड़बाह, प... : आजकल के आशिकों में और पुरा... आशिकों में क्या अन्तर है ?

उ० : पुराने आशिक गंडेरियां खाय... करते थे और आजकल के आशिक चुइंग... खाते हैं ।

गरीब चन्द की डाक
दीवाना पाक्षिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

गल गल गल बम

दीवाली भप्पी लहरी स्टायल-अगर भप्पी लहरी आतिशबाज़ी का सामान बनायें तो आतिशबाजी से कैसी डिस्को आवाजें व धमाके होंगे ? एक कल्पना-

पाकिस्तान के दौरे पर जाने वाली भारतीय क्रिकेट टीम
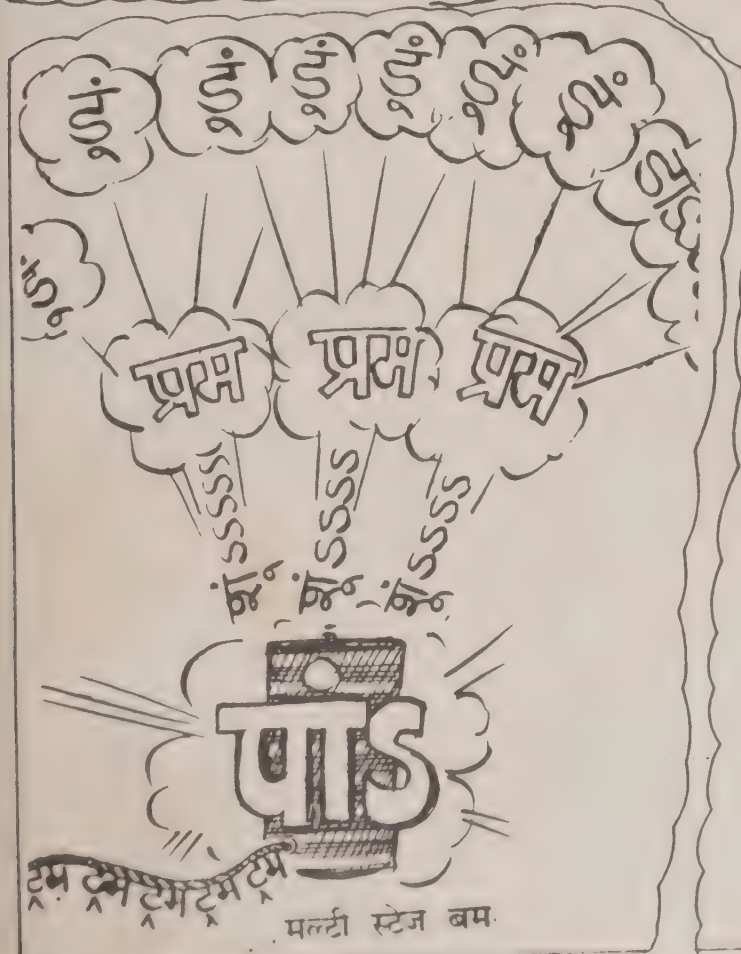
१. सुनील मनोहर गावस्कर
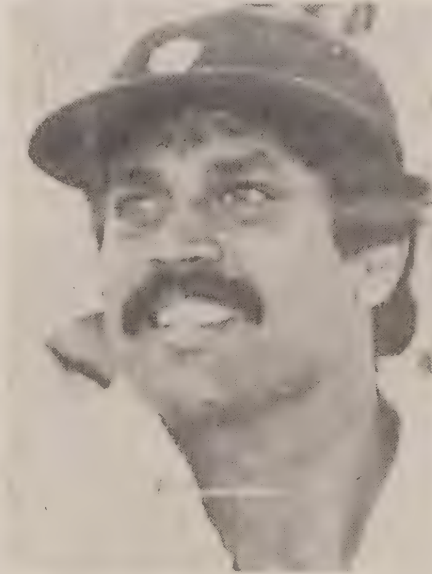
२. कपिल देव

३. गुंडप्पा विश्वनाथ

४. सैयद किरमानी
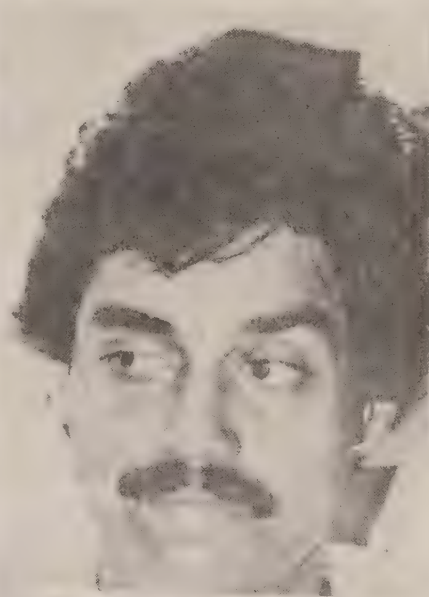
५. दलीप वेंगसरकर

६. श्रीकान्त

७. यशपाल शर्मा

८. मदन लाल

९. महेन्द्र अमरनाथ
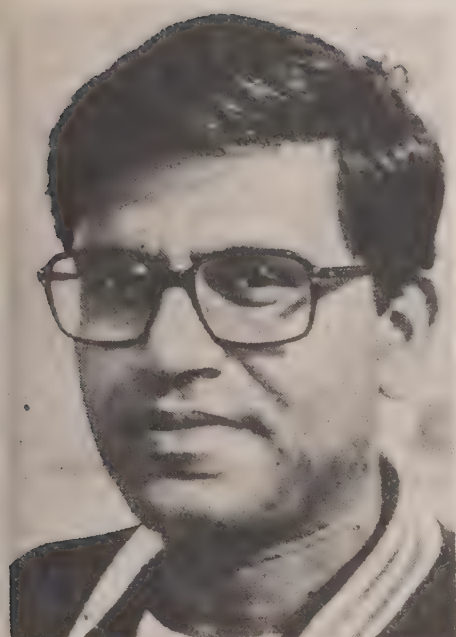
१०. दलीप दोषी

११. रवि शास्त्री
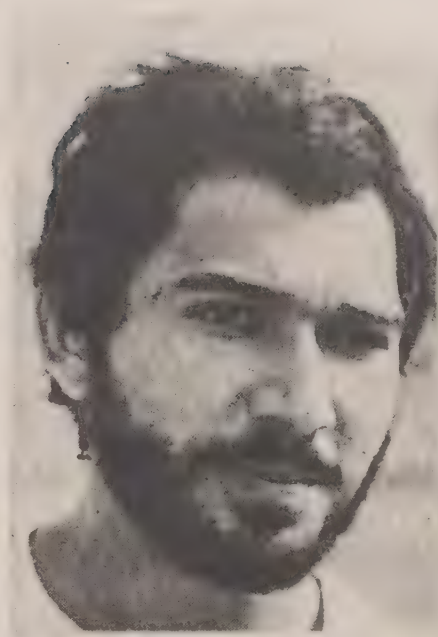
१२. अरुण लाल
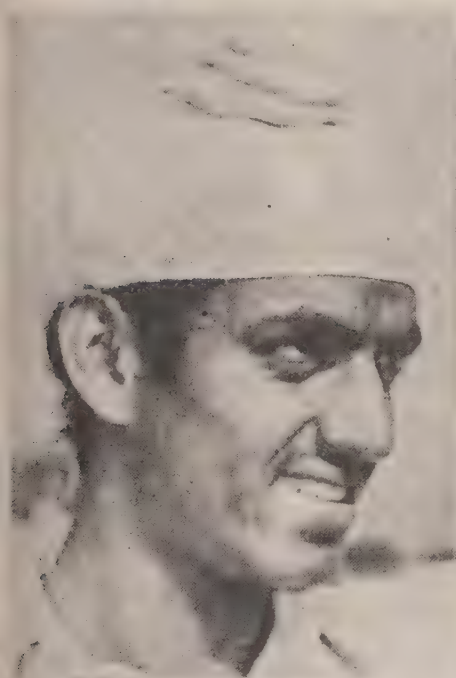
१३. मनिन्दर सिंह

१४. शिवारामाकृष्णन
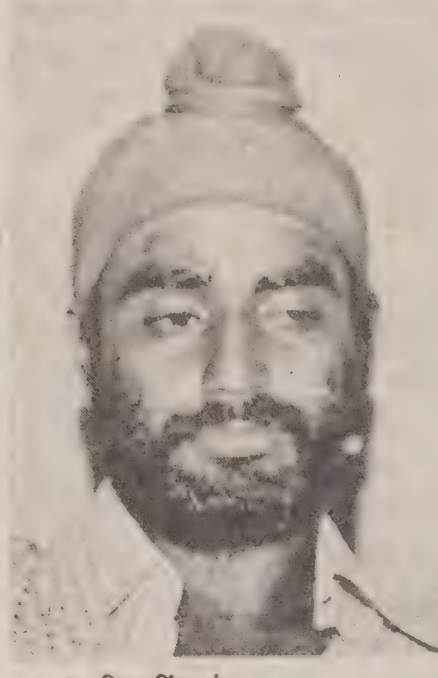
१५. बलविन्दरसिंह संधू
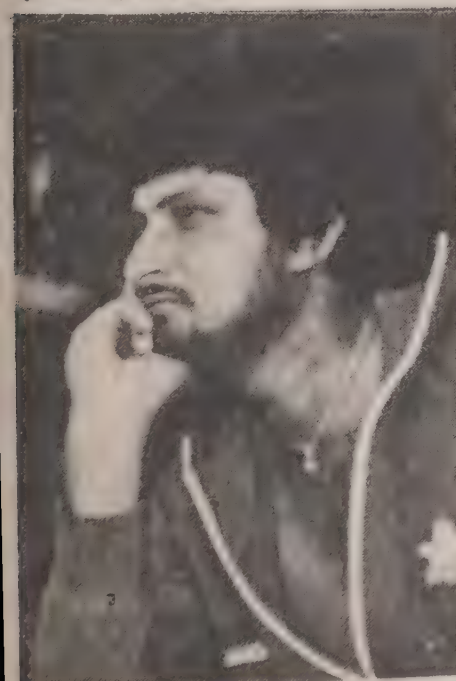
१६. संदीप पाटिल

ताएक्वोन्डो

ताएक्वोन्डो के चैम्पियन जिमि जगतियानी से भेंट—

भारत में प्राचीन मार्शल आर्ट ताएक्वोन्डो को आरम्भ करने का श्रेय श्री जिमि जगतियानी को जाता है। स्वयं जिमि को कुछ समय तक ब्रूसली से शिक्षा ग्रहण करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। कुछ ही वर्ष पहले ताएक्वोन्डो जो कराटे से भी पुराना मार्शल आर्ट है यहां अनजाना था। जिमि वियतनाम के एक 3rd डिग्री ब्लैक बेल्ट ने कुछ वर्ष से ताएक्वोन्डो का भारत में प्रचार आरंभ किया है। ये स्वयं ही ताएक्वोन्डो फेडरेशन आफ इण्डिया के संस्थापक हैं तथा इन्होंने इससे सम्बन्धित पांच और संस्थायें चलाई हैं। ये ताएक्वोन्डो का प्रचार करने के लिये प्रयास करते रहे हैं और इसीलिये ताएक्वोन्डो फेडरेशन को इण्डियन ओलिम्पिक एसोसियेशन से भी मान्यता दिलवाई है। हाल में 'ताईवान' ओलिम्पिक में भाग लेने के लिये ये एक टीम तैयार कर रहे हैं। उनसे भेंट के कुछ अंश—

प्र० : तुम्हें मार्शल आर्ट में कब और कैसे दिलचस्पी पैदा हुई ?

जिमि : वियतनाम में अपने स्कूल के दिनों में मैं एक बार एक रेस्तरां में गया और सूप का आर्डर दिया। इसी बीच चार गुण्डे रेस्तरां में आये और मुझे ढेर सारी मिर्चें डालकर सूप दिया, जब मैंने वह सूप पीने से इन्कार किया तो उन्होंने सूप मेरे सिर पर डाल दिया, मैंने बहुत ही अपमानित महसूस किया परन्तु कमजोर होने के कारण मैं अपनी रक्षा करने में असमर्थ रहा। उसी दिन मैंने कसम खाई कि मुझे भी अपनी रक्षा करना सीखना है। मैंने आत्मरक्षा के एक स्कूल में दाखिला ले लिया और पहली डिग्री ब्लेक बेल्ट का अर्जन किया।

प्र० : आप भारत में कैसे आ पहुंचे और शिक्षा का फैसला क्यों किया ?

जिमि : हमारा परिवार सन 1974 में वियतनाम में युद्ध आरम्भ हो जाने के कारण भारत आया। मेरे पिता ने लखनऊ में व्यापार आरम्भ किया परन्तु मुझे यह देखकर बहुत निराशा हुयी कि यहां ताएक्वोन्डो का कोई स्कूल नहीं है। मैं अपने घर पर ही प्रैक्टिस करता रहा। एक दिन मुझे एक शिक्षक मिले और उन्होंने मुझसे पूछा क्या मैं यहां के नौजवानों को इस नये मार्शल आर्ट की शिक्षा दे सकता हूं। मुझे यह विचार भा गया और मैंने वाई एम सी ए तथा क्रिसचन कालेज आफ फिजिकल एजूकेशन में ताएक्वोन्डो की शिक्षा आरम्भ कर दी।

प्र० : ताएक्वान्डो आरम्भ करने पर क्या आपको अच्छी प्रतिक्रिया मिली ?

जिमि : हाँ, आरम्भ में लगभग 80-85 विद्यार्थी थे और मैं एक घंटे रोज शिक्षा देता था, सन् 1977 में हमने अपने स्कूल की पहली वर्षगांठ मनाई। उस समय के उत्तर प्रदेश के चीफ मिनिस्टर तथा कोरियन राजदूत ने इस समारोह में भाग लिया था, वे शो से अत्यन्त प्रभावित हुए थे और फलस्वरूप 1978 में मुझे स्कोलर शिप पर ताएक्वोन्डो की उच्च शिक्षा के लिए कोरिया भेजा गया। वहां मैंने कोरिया के 5th डिग्री ब्लेक बेल्ट चांग सूंग डोन्फ से शिक्षा ग्रहण की चांग सूंग वर्ल्ड फेडरेशन आफ ताएक्वोन्डो के सदस्य थे। और एक वर्ष बाद मैं 3rd डिग्री ब्लेक बेल्ट अर्जित कर भारत वापिस आ गया।

प्र० : आपने भारत वापिस आकर क्या किया ?

जिमि : मैं बम्बई, कानपुर, देहरादून नैनीताल, बंगलोर इत्यादि गया और वहां अपनी कला का प्रदर्शन किया। फिर 1980 में मैंने ताएक्वोन्डो फेडरेशन आफ इण्डिया की स्थापना की। बाद में हमने बंगलौर में नेशनल ताएक्वोन्डो चेम्पियनशिप प्रतियोगिता रखी। जिसमें छः राज्यों से लगभग 100 प्रतियोगियों ने भाग लिया— उत्तर प्रदेश ने टीम औन नेशनल चैम्पियनशिप जीती और देश का उच्चतम स्कूल माना गया।

प्र० : भारत में ताएक्वोन्डो के स्तर के विषय में आपकी क्या राय है ?

जिमि : इस आर्ट का प्रचार करने में अभी कुछ समय लगेगा। हम इस फेडरेशन को इण्डियन ओलम्पिक से मान्यता दिलवाने का प्रयास कर रहे हैं। कम से मम दो या दो से कुछ अधिक समय में ही यह आर्ट नियमित रूप से परिचित कराने के लिये हम फिल्मों का सहारा ले रहे हैं, हालांकि यह आर्ट कराटे से पुराना है। इसके अतिरिक्त हमें अपना स्तर ऊंचा करने के विदेश के विशेषज्ञों की आवश्यकता होगी। हम 1982 में तैवान में होने वाली चैम्पियनशिप में भाग लेने के लिये तैयारी कर रहे हैं।
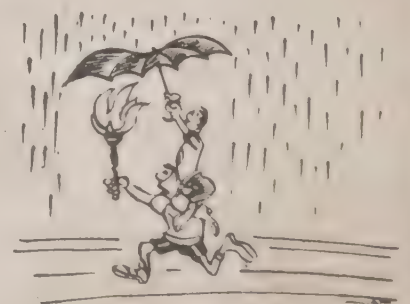
राजाजी

मसखरे तुम्हें यह जानकर खुशी होगी कि हम इस दीवाली को ऐसे ठाठ से मनायेंगे कि सारी प्रजा दंग रह जायगी।
सारे किले और महल में हम खालिस देसी घी के दिये जलायेंगे। देसी घी से सारा जगमग होगा। तुम खजांची को बता दो।
हां महाराज, आपका क्या जाता है? पैसा तो पब्लिक का है। आपके राज में तो आडिट भी नहीं होता।

महाराज क्या कर रहे हैं?
तुम यह पर्ची जाकर उनको थमा देना, कहना कि अर्जेन्ट है।
देसी घी के ख्याली पुलाव बना कर चटखारे ले रहा है।

महाराज आपने पिछली बार जब सेना बागी गब्बर को दबाने गयी थी तो वादा किया था कि दिवाली को आप सारी सेना को एक महीने की तनख्वाह बोनस के रूप में देंगे। दीवाली से पहले ही बोनस दे दिया जाए तो ठीक रहेगा वर्ना सेना में असन्तोष फैलने का डर है।—सेनापति
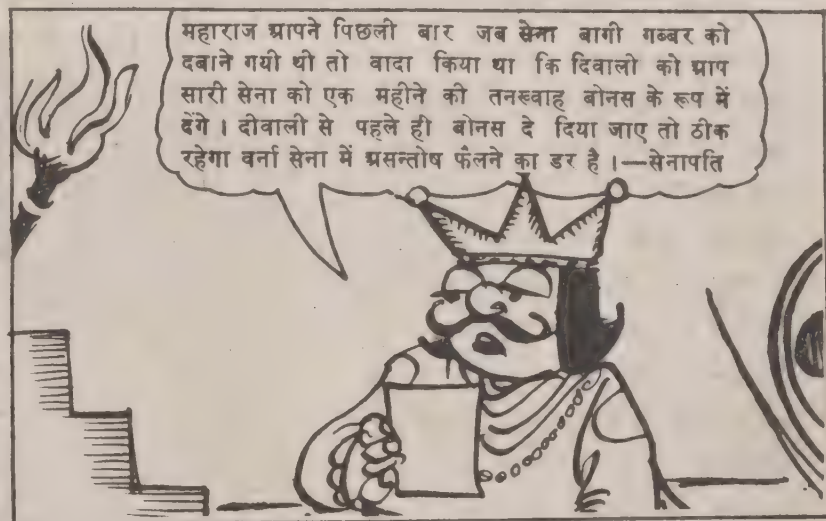
एक महीने को तनख्वाह बोनस में? सारा खर्चा कितना बैठेगा? कई लाख रुपए बनते हैं। खजाना खाली हो जाएगा।

महाराज फिर मैं ले आऊं चालीस पचास देसी घी के कनस्तर? एक ही दुकान में इतना घी तो मिलने से रहा मुझे काफी दौड़-धूप करनी पड़ेगी। पड़ौस के शहरों तक जाना पड़ सकता है। फिर उन्हें उठा कर लाने के लिए गधे वालों को भी ढूंढ़ना पड़ेगा।
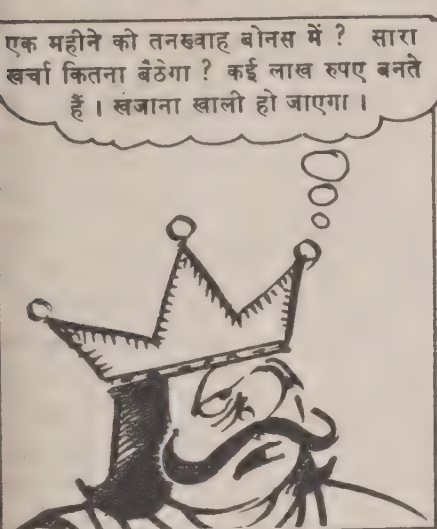
कोई देसी घी वी के दिये नहीं जलेंगे। सरसों के तेल के दो कनस्तर ले आओ। उनसे जितने दिये जल सकते हैं जला लेना। आगे से देसी घी का नाम लिया तो तोप से उड़वा दूंगा।

सूबेदार सिंह बचपन में मेरी मां कहा करती थी कि कागज में बड़ी ताकत होती है। आज मुझे पक्का यकीन आ गया। जानते हो इस छोटी सी पर्ची ने क्या किया? पचास कनस्तर देसी घी को पलक झपकते दो कनस्तर सरसों के तेल में बदल दिया।
?

दिलीप कुमार—अश्विनी, अमिताभ बच्चन—विजय, राखी गुलजार—शीतल, स्मिता पाटिल—रोमा, अमरीश पुरी—जे. के., कुलभूषण, खरबान्दा—नारंग, अशोक कुमार—(मेहमान) आफिसर, मास्टर रवि—छोटा विजय।

निर्माता—मुशीर रियाज

निर्देशक—रमेश सिप्पी

संगीत—आर. डी. बर्मन

अश्विनी का पोता अपनी पढ़ाई पूरी करके ट्रेन में आता है। अश्विनी उसे स्टेशन पर लेने आता है। वह उसे घर लाता है। अश्विनी : बेटा जो काम तुम करना चाहते हो वह आसान नहीं है। पोता : मैं पुलिस आफिसर बनूंगा। रोमा : अभी अपने दादा जी को परेशान मत कर। अश्विनी : अभी यह बी० ए० का इम्तिहान देकर लौटा है। अब जिन्दगी के इम्तिहान में कदम रखेगा। कुछ जरूरी बातें अभी तय कर लें। पोता : दादा जी क्या आपको सचमुच बहुत कठिन इम्तिहान में से गुजरना पडा था। अश्विनी : बहुत कठिन इम्तिहान था, तुम बहुत छोटे हो। शायद सही तरह से समझ नहीं पाओ इसलिए नहीं बताया। आज तुम्हें अपने बारे में अपने बेटे के बारे में सब कुछ बता दूं। अधिकार भी है तुम्हें सब कुछ पूछने का।

(अश्विनी पुरानी यादों में खो जाता है। फ्लैश बैंक शुरू होता है। अश्विनी कुमार की पत्नी शीतल एक बच्चे को जन्म देती है। अश्विनी उससे मिलने आता है) शीतल : इतने सारे फूल लाने की क्या जरूरत थी। अश्विनी : कैसी

हो तुम ? शीतल : मुझे इस बात का फखर है कि मैं तुम्हारे बच्चे की मां बनी। अश्विनी : तुमने मुझे एक बेटा दिया और मैंने तुम्हारा शुक्रिया भी अदा नहीं किया। शीतल : अपने बेटे को देखोगे। अश्विनी : पहले तुम्हें तो जी भर के देख लूं। यह जाली क्यों डाल रखी है। शीतल : सो रहा है। अश्विनी : यह तो बहुत ही छोटा है। शीतल : एक दिन का है। दो-चार दिन बाद शक्ल साफ दिखाई देगी। अश्विनी : तुम घर कब आओगी ? (अश्विनी बच्चे के लिए गाड़ी व खिलौने आदि लाते हैं। गाना होता है।)

गाना—मांगी थी इक दुआ।

(अश्विनी का सहायक सुधाकर उसे बताता है कि वरसोवा पर स्मगलिंग का माल पकड़ा गया है) सुधाकर : जिन लोगों का वह एजेन्ट है उसका नाम है यशवन्त। यह उसका फोटो, किशितियां सप्लाई करने में भी लोग उसकी मदद करते हैं। अश्विनी : प्रोब्लम क्या है। पुलिस उसे गिरफ्तार क्यों नहीं कर सकी। सुधाकर : कुछ लोग तो उसके साथ हैं कुछ उसका नाम बताने से डरते हैं। अश्विनी : चौबीस घण्टे के अन्दर वह शख्स हवालात की सलाखों के पीछे होगा। (अश्विनी, यशवन्त के पास आता है) मैं तुम्हारे लिए ही आया हूं यशवन्त। यशवन्त : इस गली में अभी तक कोई पुलिस वाला नहीं आया। तुम आ ही गये हो तो यहां से वापस नहीं जाओगे। अश्विनी : मैं वापिस जाऊँगा और तुम मेरे साथ चलोगे। यशवन्त : इस वक्त तुम्हारी जिन्दगी मेरी मुट्ठी में है। अश्विनी : तुम्हारे नाम का वारन्ट मेरी जेब में है। (यशवंत और उसके साथी अश्विनी पर टूट पड़ते हैं लेकिन अश्विनी अकेला ही उन सब की खूब पिटाई करता है)।

जे. के. वर्मा : यशवन्त को पुलिस के चंगुल से छुड़ाने की तरकीब तो है। तरकीब भी ऐसी है कि जिसने उसे गिरफ्तार किया है वही जेल से भगाने में उसकी मदद करेगा। तुम जानते हो इंस्पेक्टर अश्विनी कुमार का एक बेटा है। अपने बेटे की जान बचाने के लिए वह वही करेगा जो हम कहेंगे। (विजय अब कुछ बड़ा हो चुका है) शीतल : विजय तुम कहां हो। तुम्हारे डैडी कब से नाश्ते के लिए तुम्हारा इन्तजार कर रहे हैं। जल्दी चलो। विजय : बाई डैडी। (जे. के. के आदमी विजय को छुट्टी होने के बाद अगवा कर लेते हैं। और फिर जे. के. अश्विनी को फोन करता है।) अश्विनी : मैं अश्विनी बोल रहा हूं। आप कौन बोल रहे हैं। जे. के. : मैं कौन बोल रहा हूं यह छोड़िये जो कह रहा हूं वह सुनिए। आपका बेटा विजय मेरे कब्जे में है। अगर तुम्हें अपने बेटे से प्यार है तो यशवन्त को जेल से भागने में तुम उसकी मदद करोगे। अश्विनी : इस बात का क्या सबूत है कि मेरे बेटा तुम्हारे पास है। जे. के : लो बात करो। विजय : डैडी मुझे बचा लो यह लोग मुझे मार डालेंगे। जे. के. : एक घण्टे बाद मैं दोबारा फोन करूंगा। शीतल : क्या हुआ, किसका फोन है ? अश्विनी : कुछ नहीं होगा हमारे विजय को। कुछ बदमाश हमारे बेटे को उठा ले गये हैं। शीतल : अगर हमारे बेटे को कुछ हो गया तो मैं अपनी जान दे दूंगी। मुझे मेरा बेटा चाहिए। अश्विनी : अगर तुम ही ऐसे हिम्मत हार जाओगी तो कैसे चलेगा। तुम क्या समझती हो विजय मेरा बेटा नहीं है। मुझे उसकी फिक्र नहीं है। (उधर जे. के. विजय के पास आता है) जे. के. : आज पता चल जायेगा कि तुम्हारे बाप को तुमसे कितना प्यार है। अगर उसे तुम्हारी जान प्यारी है तो तुम्हें बचाने के लिए हमारी बात मान जायेगा। नारंग मैं थोड़ी देर में आता हूं। तुम आठ बजे अश्विनी को फोन करो और उसका जवाब टेप कर कर लो मैं आकर सुनूंगा। (नारंग फोन करता है) नारंग : अश्विनी साहब आपका क्या जवाब है। आप यशवन्त को छोड़ने को तैयार हैं या नहीं। आश्विनी : यशवन्त एक मुजरिम है। मेरे बेटे की जिन्दगी तुम्हारे हाथ में है। कर दो उसका खून, मार डालो उसे लेकिन मैं अपने फर्ज से, बेईमानी नहीं कर सकता। तुमसे जो बन पड़े कर लो, मैं यशवन्त को नहीं छोड़ सकता।

(जे. के. आवाज टेप में सुनता है। और विजय भी सुनता है) जे. के. : इस आवाज को टेप से मिटा दो और बच्चे को यहां से ले जाओ (विजय वहां से भाग लेता है। जे. के. के आदमी उसका पीछा करते हैं मगर नारंग, विजय को देखने के बाद भी अनदेखा बन जाता है। विजय वहां से भागने में सफल हो जाता है लेकिन अश्विनी के स्वांस उसके दिल से नहीं निकलते। अश्विनी, जे. के. के अड्डे पर हमला करता है। तभी सुधाकर बताता है कि विजय घर पहुंच गया है। विजय के दिल में यह बात घर कर जाती है कि उसे अपने बेटे की जान से अपना फर्ज ज्यादा प्यारा है। और इसी तरह वह जवान हो जाता है। (एक दिन कुछ गुण्डे लोकल ट्रेन में रोमा से छेड़छाड़ करते हैं। विजय देखता है और उन सबकी खूब पिटाई करता है।) रोमा : आपने उन लोगों को सबक दिया। पुलिस में रिपोर्ट भी कर दें। विजय : कोई फायदा नहीं। बहुत देर हो गई आपके घर वाले परेशान तो नहीं होंगे। रोमा : घर वाले होते तो परेशान होते। मैं अकेली रहती हूं। विजय : आपको डर नहीं लगता। रोमा : जब अकेली होती हूं तो मैं ही होती हूं और अपने आपसे क्या डरना। आप काम क्या करते हैं। विजय : काम ढूंढ़ना भी एक काम है। रोमा : मैं काफी बहुत अच्छी बनाती हूं। विजय : घर देख लिया है। फिर किसी दिन आ जाऊँगा। रोमा : मैं होटल सम्राट में काम करती हूं। विजय : किस डिपार्टमेंट में। रोमा : वहां गाती हूं। विजय : किसी दिन आपका गाना सुनने जरूर आऊंगा। रोमा : मेरा नाम रोमा है। (जे. के. वर्मा, अश्विनी के आफिस में आता है।) जे. के. : गुड मार्निंग। अश्विनी : मि० जे. के. वर्मा, मेरे आफिस में सिगार या सिगरेट पीवा मना है। इसे बुझाकर आइए और आने से पहले इजाजत लीजिए।

(जे. के. सिगार बुझाकर इजाजत लेकर अंदर आता है।)

अश्विनी : मि० जे. के. वर्मा आप एक बिजनैसमैन हैं। आपका बड़ा कारोबार है। जे. के. : कानून और पुलिस की मदद करना मैं अपना फर्ज समझता हूं। अश्विनी : अगर आप जैसे शरीफ लोग हों तो हमारा डिपार्टमेंट ही बन्द हो जाये। अश्विनी उसे कुछ लोगों के माल समेत पकड़े जाने की खबर सुनाता है। अश्विनी : इन सब लोगों में एक बात कामन है कि पकड़ा हुआ हर आदमी आपके पास काम कर चुका है। जे. के. : अगर मेरे यहां से जाने के बाद कोई आदमी गैर कानूनी काम करता है तो अपनी मर्जी से करता है। अश्विनी : यह एक मशहूर स्मगलर की तस्वीर है। जे. के. : मैं नहीं जानता। अश्विनी : उसकी और जे. के. की तस्वीरें दिखाता है। जे. के. : मैं एक कामयाब बिजनैसमैन हूं। हजारों पार्टियों में जाता हूं। इन तस्वीरों की मदद से आप यह साबित नहीं कर सकते कि मैं स्मगलर हूं। और कुछ पूछना चाहते हैं आप, मेरा वक्त बहुत कीमती है। अश्विनी : अगर आपने यह धन्धे बन्द नहीं किये तो बहुत जल्द अपने आपको कैद खाने की सलाखों के पीछे पाओगे। आपको यही वार्निंग देने के लिए बुलाया था।

(विजय नौकरी की तलाश करता है पर उसे नौकरी कहीं नहीं मिलती। अश्विनी घर आता है। अश्विनी : नौकरी नहीं मिलती तो कोई बिजनैस कर ले। हमारा एक ही बेटा है वह सैटल हो जाये और अपने आपको कुछ बना ले। हमें और क्या चाहिए। (सुधाकर अश्विनी को घर पर फोन करता है कि लोकल ट्रेन में विजय ने चार लड़कों को मारा-पीटा है। उनमें से एक लड़के ने उसके खिलाफ पुलिस में रिपोर्ट लिखवाई है।) अश्विनी : रिपोर्ट पुलिस स्टेशन पर ही लिखो। यह कोई घरेलू बात नहीं है। शीतल : मेरा विजय ऐसा नहीं है। अश्विनी : हर बात का एक उसूल होता है, कायदा होता है। विजय : मैं पुलिस स्टेशन चला जाऊंगा जो पूछेंगे बता दूंगा। पूछने वाला कौन है मुझे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। पुलिस स्टेशन पर अश्विनी ही विजय से पूछ-ताछ करता है। विजय बताता है कि वह चारों एक लड़की को परेशान कर रहे थे। अश्विनी : उस लड़की का नाम व पता बता सकते हो। विजय : बता सकता हूं। अश्विनी : तुमने या उस लड़की ने पुलिस में रिपोर्ट क्यों नहीं लिखवाई। विजय : जरूरी नहीं समझा। अपनी या किसी और की हिफाजत के लिए मुझे किसी की मदद की जरूरत नहीं। अश्विनी : आज नहीं तो कल किसी मुश्किल में फंस जाओगे, यह बात भी याद रखना। विजय : आपकी यह बात भी याद रखूंगा। (घर आकर शीतल से) : मैं क्या बच्चा हूं जो रोज मुझे नसीहत दी जाती है। विजय के० डी० नारंग के होटल में नौकरी के लिए आता है। मैनेजर कह देता है कि बिना तजुर्बे के यहां जगह नहीं है। तभी नारंग आता है। वह उसे नौकरी देने को कहता है। तभी उस होटल में रोमा का गाना होता है।

गाना —हमें बस ये पता है।

(विजय रोमा के घर आता है) रोमा : मुझे याद है आपने कहा था आप आयेंगे। विजय : सोचा यह खुश-खबरी सबसे पहले आपको दूं। रोमा : आपको नौकरी मिल गई। सचमुच मैं काफी बहुत अच्छी बनाती हूं। विजय : फिर कभी। एक बात कहनी थी आप बहुत अच्छा गाती हैं। (विजय घर आता है) अश्विनी : विजय तुम्हारी मां ने बताया कि तुमने होटल में नौकरी कर ली है। अगर खुद नहीं समझ सकते तो पूछ लिया करो। जानते हो वह किस किस्म का होटल है। वहां स्मगलर्स के गैर-कानूनी काम होते हैं वह ब्लैक लिस्टेड है। वहां जुर्म पलते हैं। विजय : ऐसा कोई बिजनैस नहीं जिसमें थोड़ी-बहुत बेईमानी नहीं होती हो। आप जिस डिपार्टमेंट में काम करते हैं क्या वहां बेईमानी नहीं होती ? उस आदमी ने उस वक्त भी मुझे बचाया था जिस वक्त आपने मेरी जिन्दगी बचाने से इंकार कर दिया था। शीतल : विजय क्या यह भी भूल गये तुम किससे, बात कर रहे हो। अश्विनी : मुझे इस बात का अफसोस है और दुःख जरूर है कि तुम्हारे ख्याल इतने घटिया हैं। शीतल : जाने दीजिए। अश्विनी : जब मैं बोल रहा हूं तुम बीच में मत बोलो। विजय : मैं इस घर से जा रहा हूं।

(रोमा को पता चलता है तो वह उसे अपने घर में कमरा दे देती है। नारंग अब जे. के. से अलग होकर स्मगलिंग करता है। जे. के. उसका दुश्मन बन जाता है। और एक दिन उसके आदमी नारंग पर हमला करते हैं लेकिन ठीक मौके पर विजय आ जाता है और नारंग को बचा लेता है।

जे. के. : जो कल तक हमारे टुकड़ों पर पलता था आज हमारे मुकाबले का स्मगलर बन गया है। (विजय, नारंग को याद दिलाता है कि वर्षों पहले एक बार उसने भी एक बच्चे को बचाया था और वह वही है।) नारंग : तुम डी. सी. पी. अश्विनी कुमार के बेटे हो। विजय : हां अब मैं उनके साथ नहीं रहता। (शीतल, विजय का पता लगा कर उसके पास आती है।) विजय : कैसी हो माँ। मैं तुम्हारे लिए चाय बनाता हूं। शीतल : चाय मैं बनाऊंगी घर चल कर। विजय : मां मुझे तुमसे कोई शिकायत नहीं लेकिन उनके बारे में कुछ कहूंगा तो तुम्हें बुरा लग जायेगा मेरी जबान मत खुलवाओ। शीतल : मैं भी नहीं जाती। वह इतने ही बुरे हैं तो रहने दो अकेले तुम बाप, बेटे बहुत समझदार हो। विजय : अच्छा जैसा तुम कहोगी वैसा ही करूंगा। (जे. के. का भेजा हुआ एक आदमी गणपत राम होटल में रोमा से छेड़-छाड़ करता है। विजय उसकी खूब पिटाई करता है। लेकिन कुछ देर बाद ही उस आदमी का कत्ल हो जाता है। उसके कत्ल का इल्जाम विजय पर आता है। सुधाकर, अश्विनी के घर विजय के नाम का वारंट लेकर आता है।) विजय : मैं तुम्हारी कसम खाकर कहता हूं मम्मी कि मैंने किसी का कत्ल नहीं किया।

शीतल : यह मेरी झूठी कसम नहीं खा सकता। पुलिस को जरूर कोई गलत फहमी हुई है। सुधाकर : क्या सम्राट होटल में तुम्हारा किसी आदमी से झगड़ा नहीं हुआ था? तुमने उसे जान से मारने की धमकी दी थी। विजय : मेरा उससे झगड़ा जरूर हुआ था लेकिन मैं तभी वापस चला आया था। अश्विनी : हो सकता है तुम सच कह रहे हो लेकिन इन हालात में मैं कुछ नहीं कर सकता। शीतल : आप कुछ नहीं करेंगे। विजय : मां मेरे लिए किसी से रहम की भीख मांगने की जरूरत नहीं। अगर तुम्हारा बेटा बेकसूर है तो घर वापस लौट आयेगा। अश्विनी : तुम

कसूरवार हो या नहीं इसका फैसला तो अदालत में ही होगा। विजय : मैं अपना बयान भी अदालत में ही दूंगा।

(के. डी. नारंग कोर्ट में जमानत देकर विजय को छुड़ा लाता है।) नारंग : तुम जानते हो विजय मैं तुम्हारे लिए कुछ भी कर सकता हूं। विजय : और अब मैं भी आपके लिए कुछ भी कर सकता हूं। अश्विनी : विजय मेरी एक नसीहत है। अपनी जिद में तुम किसी ऐसे रास्ते पर न चले जाओ जहां से वापस न आ सको। विजय : इस बार मैं वापस आने के लिए नहीं जा रहा हूं। (शीतल, अश्विनी के पास आती है) शीतल चलिए सो जाइए।

अश्विनी : तुम चलो मैं आता हूं। तुम्हारा बेटा खो गया है शीतल। यह सब कैसे हुआ? कौन सी कमी रह गई हमारे प्यार में? क्या भूल हुई हमसे? मेरी आंखों के सामने मेरे बेटे के दाम लग गये। उन्होंने मेरे बेटे को खरीद लिया, मैं देखता रहा कुछ नहीं कर सका।

(नारंग, विजय को बताता है कि उसे कत्ल के इल्जाम में फंसाने की साजिश जे. के. ने ही की थी। उसी ने बचपन में उठाया था। विजय जे. के. के पास आता है और उसे बचपन की याद दिलाता है। विजय : उस दिन तुमने एक फोन मिलाया था। आज मैं फोन करूंगा।) (विजय, जे. के. से सब माल निकलवा लेता है।) नारंग : विजय न जाने मेरा तुम्हारा क्या रिश्ता है। मेरा अपना कोई बेटा नहीं। तुम भी मेरे बेटे की तरह हो। विजय : बेटा शब्द एक गन्दी गाली की तरह लगता है मुझे इसके अलावा आप चाहें जिस नाम से बुला सकते हैं।

(नारंग, विजय को रहने के लिए एक अच्छे मकान का इन्तजाम कर देता है। रोमा और विजय बाहर घूमने-फिरने जाते हैं। शीतल को भी सुधाकर से उसके बारे में पता चल जाता है। विजय और रोमा गा रहे हैं।)

गाना—जाने कैसे कब कहां।

(अश्विनी अपने आफिसर के पास आता है।) अश्विनी : सर यह केस आप मुझसे इसलिए वापस लेना चाहते हैं कि कहीं मैं अपने फर्ज से डगमगा न जाऊं। अब से पहले मैंने कितने ही मुजरिमों की कलाई में हथकड़ियां पहनाई हैं। वह भी तो किसी के बेटे होंगे। अगर मैं अपने बेटे को गिरफ्तार नहीं कर सकता तो मुझे इस वर्दी को पहनने का कोई हक नहीं है। मेरी आपसे इल्तजा है यह केस मेरे पास ही रहने दिया जाये। आफिसर : ठीक है यह केस तुम्हारे पास ही रहेगा। (अश्विनी घर आता है) अश्विनी : शीतल मेरी जिन्दगी में कुछ असूल हैं। मैंने कभी अपने फर्ज से मुंह नहीं मोड़ा। शीतल : मैं नहीं चाहती कि मेरी खातिर आप अपनी नजरों से गिर जायें। वह अपनी गलती कबूल कर लेगा फिर हम उसे माफ कर देंगे। (शीतल, विजय का पता लगाकर उससे मिलती है।) विजय : तुम किस जुर्म की बात कर रही हो। मैंने कोई जुर्म नहीं किया। अगर मैं मुजरिम हूं तो उनसे कहो कि सबूत लायें। उन्हें तो प्यार है अपनी कुर्सी से, अपनी नौकरी से, अपने फर्ज से। शीतल : खबरदार जो उनके लिए कोई घटिया लफ्ज कहा। वह मुझे भेजेंगे तुम्हारी मुखबरी के लिए। मेरा बेटा घर छोड़ कर चला गया शायद किसी ने मुझे गलत पता दे दिया। (अश्विनी, विजय को बुलाता है।) विजय : आपने मुझे यहां क्यों बुलाया है। पुलिस स्टेशन बुला लिया होता। अश्विनी : जो भी हो तुम अब भी मेरे बेटे हो। विजय : आपकी आवाज में एक पुलिस आफ़िसर की बू आ रही है। अश्विनी : तुम्हारे सोचने के तरीके पर मुझे अफसोस है। मैं तुम्हें ये बताने के लिए आया हूं कि तुम्हारी मां बहुत बीमार है अगर अपनी मां के लिए तुम्हारे दिल में कोई जगह है तो मेरा मशवरा है उससे जाकर मिल आओ। विजय अपनी मां के पास आता है। शीतल : चलो तुम आ गये। मेरी

बीमारी का कुछ तो फायदा हुआ। जीते जी तुम्हें देख लिया। मेरे मरने के बाद मेरी अर्थी को...। विजय : क्यों ऐसी बात करती हो मैं तुम्हें ले जाने के लिए आया हूं। बेहतरीन डाक्टर से तुम्हारा इलाज कराऊंगा। इस घर में तुम्हें क्या मिलने वाला है। शीतल : वह इतने ऊंचे ओहदे पर हैं। चाहते तो इतना पैसा कमा सकते थे लेकिन इस घर में बेईमानी का एक पैसा भी नहीं आया। विजय : माँ कब तक उनके असूलों और आदर्शों का बोझ उठाती रहोगी। चलो मेरे साथ। शीतल : मैं अभी इतनी कमजोर नहीं हूं कि अपने पति की ईमानदारी का बोझ न उठा सकूं। बेईमानी की कमाई का एक पैसा भी मेरे लिए जहर है। तू माँ को दवा में जहर मिलाकर पिलायेगा। विजय : ठीक है, माँ मैं जाता हूं।

(विजय, रोमा के पास आता है और खूब शराब पीता है।) रोमा : आज इतनी शराब क्यों पी रहे हो। विजय : जब खत्म हो जायेगी तो और ले आयेंगे। शराब खरीदने वाले रुपये बहुत हैं। लेकिन दवा खरीदने वाले पैसे मेरे पास नहीं हैं। जानती हो रोमा मेरे बाप ने दो शादियां की हैं। एक मेरी माँ से और एक अपनी नौकरी से। अपनी माँ का बेटा हूं और सौतली माँ का बेटा है कानून। कानून मेरा सौतेला भाई है। उस घर में मेरी सौतेली मां ने मेरी माँ को कैद कर दिया है। मेरी मां बहुत बीमार है और मैं कुछ नहीं कर सकता, मेरा मां-बाप मुझे बेटा नहीं जहरीला सांप समझता हैं। तुम भी मुझसे नफरत करो। मैं जहरीला सांप हूं तुम्हें भी डस सकता हूं। रोमा : विजय मैं मां बनने वाली हूं। विजय एक मन्दिर में रोमा से शादी कर लेता है। रोमा अपने सास-ससुर से मिलने की इच्छा जाहिर करती है। विजय : मुझे मजबूर मत करो। तुम जाना चाहती हो तो जरूर जाओ। मुझे कोई एतराज नहीं। (रोमा, विजय के घर आती है।)

रोमा : मेरा नाम रोमा है। मैं आपसे और विजय की माताजी से मिलने आई हूं। अश्विनी : तुम विजय की दोस्त हो। रोमा : जी, हमने शादी कर ली है। (पैर छूती है) अश्विनी : जीती रहो। अभी तुम्हें विजय की मां से मिलाता हूं। शीतल यह रोमा है हमारी बहू। ऐसे हैरान और परेशान देखने से क्या फायदा। इसे आशीर्वाद दो। शीतल : तुमने अपने घर वालों से आज्ञा मांग ली। रोमा : किमसे आज्ञा मांगती। मेरा तो कोई नहीं है। शीतल, रोमा के गले में एक हार पहनाती है। शीतल : जब मेरी शादी हुई थी तो मां जी ने इसे अपने हाथों से मेरे गले में पहनाया था। अब कभी मत कहना मेरा कोई नहीं है। एक दिन स्मगलिंग का माल ले जाते हुये अश्विनी, विजय को देख लेता है। और उसका पीछा करता है मगर विजय किसी तरह बचकर निकल जाता है। पुलिस वाले यही समझते हैं कि उसने जान-बूझकर विजय को भागने का मौका दिया। आफिसर फिर अश्विनी के हाथ से वह केस वापस लेना चाहता है। मगर वह अपना इस्तीफा दे देता है और उस पर दो दिन बाद की तारीख डाल देता है। वह विजय की गिरफ्तारी के लिए सिर्फ दो दिन की मोहलत माँगता है। आफिसर : ठीक है मैं अपनी जिम्मेदारी पर तुम्हें दो दिन देता हूं।

(अश्विनी, सुधाकर से कहता है कि जहां भी गैर कानूनी काम होते हैं वहां रेड कर दो। कहीं न कहीं विजय जरूर मिलेगा। जे. के. : मेरे सब ठिकानों पर छापा पड़ गया है और मैं चूहे की तरह बिल में बैठा हूं। एक—आपके नकली पासपोर्ट का इन्तजाम हो गया है। जे. के. : जब मैं यह मुल्क छोडूंगा, अश्विनी कुमार दुनिया छोड़ चुका होगा। (पुलिस की मदद से अश्विनी, विजय को गिरफ्तार कर लेता है। और शीतल को बताता है कि वह पुलिस की हिरासत में हैं) शीतल : यह तो एक न एक दिन होना ही था। मैं एक बार उससे मिल सकती हूं। अश्विनी : क्यों नहीं।

रास्ते में ही जे. के., अश्विनी पर गोली चलाता है लेकिन सामने शीतल आ जाती है। अश्विनी : नहीं शीतल तुम चली जाओगी तो मेरे पास कुछ नहीं रहेगा। मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकता। मेरी जान मुझे छोड़ कर मत जाओ। विजय को जब अपनी मां के बारे में पता चलता है तो उसका खून खौल उठता है। वह एयरपोर्ट तक जे. के. का पीछा करता है। उसकी खूब पिटाई करता है और अन्त में उस पर गोलियां चलाता है। और फिर भागता है। अश्विनी उसका पीछा करता है।

अश्विनी : रुक जाओ विजय वर्ना मैं गोली चला दूंगा। विजय नहीं रुकता तो अश्विनी उस पर गोली चलाता है। वह गिरता है तो अश्विनी उसे सम्भालता है। विजय : मुझे कोई सहारा नहीं चाहिए। मैं अकेला जी सकता हूं तो अकेला मर भी सकता हूं। मेरी मां को मार दिया उसने। अश्विनी : विजय यह सब क्या हुआ। विजय : एक न एक दिन तो यह होना ही था। मैंने बहुत कोशिश की कि अपने दिल से आपकी मुहब्बत को निकाल दूं। लेकिन नहीं निकाल सका, पता नहीं क्यों? अश्विनी : इसलिए कि मैं भी तुमसे मुहब्बत करता हूं बेटे। विजय : आपने कहा क्यों नहीं डैडी। अश्विनी : ना विजय मैं तुम्हें इस तरह नहीं जाने दूंगा। विजय चल बसता है। गाने की आवाज आती है।

गाना—ऐ आसमाँ बता।

फ्लैश बैक खत्म होता है। अश्विनी अपने पोते को बतला रहा था। अश्विनी : यह थी मेरी और मेरे बेटे विजय की कठोर परीक्षा। अब तुम्हें जिन्दगी में क्या करना है? किस राह पर चलना है? इसका फैसला तुम ही को करना है। पोता : मैं पुलिस आफिसर ही बनूंगा। रोमा : पिता जी इसे आशीर्वाद दीजिए कि जिस शक्ति से जिन्दगी के हर इम्तिहान से आप गुजरे हैं वही शक्ति इसे भी मिले।

रोमा का बेटा अपने दादा से आशीर्वाद लेकर चल देता है। ●

मनिन्दर सिंह, यह आतिशबाजी का नमूना मैंने खुद बनाया है। इसके लिए मुझे कई किताबें पढ़नी पड़ीं। आतिशबाजी बनाने वालों से सलाह मशविरा करना पड़ा।

यह देखो मैं बत्ती लगा रहा हूं। अब इसका कमाल देखना। यह सीधे नीना के घर फटेगा। मैंने नीना को पहले ही बता रखा है कि दीवाली को ठीक इस वक्त नौ बजे अपनी छत पर आ जाना।

जब यह फटेगा तो आतिशबाजी में ही नीना लिखा हुआ चमकेगा। नीना उसे देखकर मुझ पर फिदा हो जाएगी।

तू भी लल्लू ही रहा यार। आतिशबाजी तो स्टडी की लेकिन स्पेलिंग में जीरो ही रहा।
हे भगवान नीना क्या सोच रही होगी?

हास्य व्यंग

एशियाड-८२–आइये आप भी कुर्सी दौड़ में हिस्सा लीजिए

गोविन्द नारायण मिश्र

आजकल देश भर में अखबारों और पत्र-पत्रिकाओं में प्रमुखता से चर्चा है— भारत में एशियाड-82 दिल्ली में जोर-शोर से तैयारियां हो रही हैं। नवम्बर आते ही भारत ही नहीं एशिया से लेकर यूरोप तक के खेल प्रेमियों की आंखें अखबारों और टी० वी० पर और कान रेडियो पर चिपक जायेंगे। मेजबान और मेहमान सभी देश अपने-अपने खिलाड़ियों को खिला-पिलाकर, दौड़ा-दौड़ाकर तमगे हासिल करने के चक्कर में पड़े हुये हैं। भारतीयों के क्या कहने? हर खेल के लिये विदेशी साज सामान, तौर तरीके और प्रशिक्षक मुहैया कर दिये गये हैं। हाकी के मैदान 'एस्ट्रोटर्फ' से लेकर हाकी की गेंद तक विदेशों से मंगाई गई हैं। भारत के खिलाड़ी बडा शोर मचाते थे। यह नहीं है, वह नहीं है, खेल का स्तर कैसे सुधरे? उनके भी दिन फिरे। भारत वासियों का अहोभाग्य की एशियाड-82 भारत में आयोजित हुआ। अब तो हाल यह है कि भारत का हर नागरिक खेलों में रुचि लेने लगा है।

भारत की राजधानी दिल्ली का भी भाग्योदय हुआ। प्रसिद्ध ब्रिटिश पुरातत्व वेत्ता सरमार्टियश व्हीलर के अनुसार दिल्ली सात बार नये सिरे से बसाई गई थी। दिल्ली महानगर में सातों दिल्ली डूब चुकी हैं। एशियाड-82 के आयोजन ने 'दिल्ली' का आठवीं बार कायाकल्प कर दिया है। दुनिया भर के खिलाड़ी, खेल प्रेमी, दर्शक, पत्रकार, टी० वी०, रेडियो, रिपोर्टर दिल्ली की शोभा बढ़ायेंगे। भारत का एक "इनसेट" खराब हो गया तो क्या हुआ अमेरिका और रूस के "इनसेट" सारे विश्व में कार्यक्रमों का प्रसारण करेंगे। भारतीयों का रंगीन टी० वी० देखने का सपना भी एशियाड-82 में पूरा हो जाने की आशा है।

क्या आप एशियाड-82 में भाग ले रहे हैं? यदि आप का चुनाव किसी भी खेल के लिये नहीं हुआ है तो भी निराश न हों। इसी अवसर पर भारत भर में बच्चों के लिये "जलेबी दौड़" और युवक-युवतियों के लिए" कुर्सी दौड़" नए सिरे से आयोजित की जा रही हैं।' 'कुर्सी दौड़ में सारे देश का नेतृत्व श्री राजीव गांधी, जम्मू काश्मीर के श्री फारुख शेख अब्दुल्ला, असंतुष्ट और विपक्षी दलों का सामूहिक नेतृत्व मेनिका गांधी और बच्चों की 'जलेबी दौड़' का नेतृत्व राहुल और वरुण गांधी संयुक्त रूप से करेंगे। इसमें प्रत्येक नागरिक को भाग लेने का वैसा ही अधिकार है जैसाकि आम चुनाव में वोट देने का। आइये! इस स्वर्णिम अवसर पर आप भी इन दौड़ों में हिस्सा लीजिए।

यूं तो भारत में 'दौड़ने' की परम्परा काफी पुरानी है। घुड़दौड़ से लेकर कुर्सी दौड़ तक सब में भारत ने नाम कमाया है। मिल्खा सिंह ने 'ओलम्पिक' में दौड़कर भारत का नाम ऊंचा किया था। भारत में "कुर्सी दौड़" की परम्परा की शुरूआत आजादी मिलते ही हो गई थी। जंगे आजादी में जिन्होंने त्याग और बलिदान किये थे, जो शहीद हो गये, उनके नाम पर 'शहीद स्मारक' बना दिये गये, जो आजादी की सांस ले रहे थे, उन्हें देश का शासन भार सौंप दिया गया। राष्ट्रपति से लेकर विधान सभा सदस्यों तक की कुर्सियों पर 'राष्ट्र भक्तों' को वरीयता के आधार पर जनता ने चुनकर देश सेवा का अवसर दिया।

संविधान का निर्माण हुआ। गणतंत्र की स्थापना हुई। और जनता को प्रगति के बड़े-बड़े मैदान—मसलन स्वतंत्रता, समानता, सम्पन्नता, साक्षरता और समाजवाद आदि दिखाये गये और उन्हें इन मैदानों पर दौड़ने के लिये प्रेरित किया गया। जनता ने दौड़ना शुरू कर दिया, आज भी दौड़ रही है। आम नागरिक तो अभी तक लक्ष्य ही ढूंढ रहा है, दौड़ते-दौड़ते थककर निराश हो गया, 'दिल्ली अभी दूर है', हां भारत के चन्द लोग गणेश जी की तरह चूहे पर बैठकर अपने 'माता-च पिता-च' यानी 'नेता जी' की तीन परिक्रमा कर लक्ष्य तक पहुंच गये हैं। कुछ लोग संविधान में संशोधन कर बैकडोर से मंजिल पा गये, कुछ लोग वरासत में लक्ष्य पर पहुंच गये या पहुंचा दिये गये हैं।

आजादी के बाद भारत की आबादी भी दौड़ लगाने में पीछे नहीं रही और 35 वर्ष में ही 22 करोड़ से 60 करोड़ हो गई। इन्दिरा सरकार के समझाने-बुझाने का असर नहीं पड़ा तो 'इमरजेन्सी' लगाकर दौड़ के मैदान में 'बाधायें' खड़ी कर दीं। आबादी ने बाधा दौड़ में इन्दिरा सरकार का 'स्टम्प' ही उखाड़ दिया। दुबारा आने पर इन्दिरा सरकार ने बाधाओं के स्थान पर परिवार कल्याण की मीठी गोलियां बाँट-बाँट कर दौड़ने वालों की रफ्तार कुछ हद तक सुस्त कर दीया है।

आबादी के साथ ही शिक्षा के मैदान में भारतवासी तेजी से दौड़ते रहे। और करोड़ों लोग शिक्षा के लक्ष्य तक पहुंच गए। शिक्षित लोग जीविका और सम्पन्नता के मैदान पर दौड़ने लगे और 'कुर्सी दौड़' की परम्परा मुख्य उद्देश्य बन गई। 'येनकेन प्रकारेण' कुर्सी मिलना ही चाहिए। आपाधापी, खींचतान, और लंगड़ी मारने में ही आम नागरिक उलझ कर रह गया। असन्तोष, साम्प्रदायिकता भ्रष्टाचार, शोषण, बेकारी और मंहगाई देश की प्रगति के मैदान में आगे बढ़ गए।

राजनीति के मैदान में भी राजनीतिज्ञों ने 'कुर्सी दौड़' की परम्परा शुरू कर दी। नेताओं ने एक दूसरे से बाजी मारने के चक्कर में नए-नए कीर्तिमान स्थापित कर लिए। कांग्रेसी-समाजवादी हो गए, समाजवादी-कांग्रेसी हो गए, कम्यूनिस्ट भी पीछे नहीं रहे। नेताओं के आदर्श धूल धूसरित हो गए। 'कुर्सी' ही परम लक्ष्य बन गई। जिन्हें कुर्सी मिल गई वह किसी भी कीमत पर कुर्सी छोड़ने को राजी नहीं। शरीर में दम नहीं रह गया, मन अस्वस्थ रहने लगा, बुद्धि कुंठित होने लगी, पैर कब्र में लटकने लगे, ऐसी दशा में कुर्सी छोड़ने का औचित्य भी नहीं रह गया। राजनीति में वरासत के आधार पर कुर्सीयों का बंटवारा होने लगा। आम जनता 'कुर्सी' को ताकती ही रह गई बेटों, बहुओं, दामादों और दीगर रिश्तेदारों ने कुर्सियां उच्च सरकारी अधिकारी से लेकर चपरासी तक की लाखों कुर्सियां

म जनता के लिए बनाई गई थीं। जादी मिलने के बाद इस 'कुर्सी दौड़' शिक्षा, योग्यता, दक्षता और प्रतिभा कुर्सियां हासिल कर ली थीं। किन्तु द में ज्यों-ज्यों कुर्सियों की संख्या बढ़ी, र्यों-त्यों धावकों की संख्या बढ़ी और रिणाम इस प्रकार रहे—

'कुर्सी दौड़' का पहला दौर-शिक्षा, तिभा, योग्यता जातीयता, आरक्षण, जनीति और भ्रष्टाचार के बीच मुका-ला। पहला दौर समाप्त। परिणाम-हला स्थान राजनीति। दूसरा स्थान रक्षण। तीसरा स्थान भ्रष्टाचार।

'कुर्सी दौड़' का दूसरा दौर-पहला ान आरक्षण, दूसरा-जातीयता, तीसरा ान भ्रष्टाचार।

शिक्षा, प्रतिभा, योग्यता दोनों दौर में पिछड़ गये और अव्यवस्था, असंतोष, शोषण, कुण्ठा और अत्याचार से पीड़ित होकर कुर्सी दौड़ के मैदान में घुटने टेक देने को विवश हो गए।

'कुर्सी दौड़' का तीसरा दौर एशियाड़-82 की तैयारियों के साथ शुरू हो गया है। शिक्षा, स्वास्थ्य, प्रतिभा और योग्यता के लिए सुनहरा अवसर आप भी यदि अभी तक कुर्सी दौड़ में दौड़ ही रहे हैं, कोई कुर्सी हाथ नहीं लगी तो इस मौके पर चूकिये नहीं। आइए! आप भी एशियाड-82 की कुर्सी दौड़ में भाग लीजिए। निश्चय ही सारे तगमे भारत को ही मिलेंगे।

मूवी मसाला

एक अंग्रेजी कहावत है,' पैसे से घोड़ी चलती है' पर बेचारे जलाल आगा के साथ उल्टा ही हुआ, "घोड़ी पैसा ले जाती है"। जलाल आगा ने अपना सब कुछ घर, पैसा, कारें अपनी एडवरटाईजिंग कम्पनी अपनी पत्नी वेलरी के नाम कर रखी थी। और एक दिन जब आगा अपने बच्चों को आईसक्रीम खिलाकर वापिस लौटे तो उनकी बीवी वेलरी ने उन्हें कोर्ट का आर्डर दिखा घर में घुसने नहीं दिया। आज बेचारा आगा अपना सब कुछ, अपने बच्चों समेत खो सड़क पर खड़ा है। क्यों 'आगा का पैसा घोड़ी ले गयी न ?'

आनन्द बिना देव

देव आनन्द अपनी फिलम 'आनन्द और आनन्द' के कारण आनन्द न था मुसीबत में पड़ गये हैं। लगता है उनकी इस शताब्दी की खोज नताशा सिन्हा ने इन्हें बना दिया। 'यंग स्टार' प्रोडक्शन कलकत्ता के ओ.पी. सिंह के साथ नताशा सिन्हा का 15 फरवरी 1982 से पाँच साल का कान्ट्रेक्ट है जिसकी शर्तों के अनुसार नताशा किसी भी और प्रोडयूसर के साथ काम नहीं कर सकती। कलकत्ते की सिविल कोर्ट ने कान्ट्रेक्ट के मूल कागजात की जाँच कर, फैसला कर दिया है कि नताशा पर 'ब्रीच आफ ट्रस्ट' का केस है और इसलिये उसे आनन्द और आनन्द की शूटिंग में भाग लेने की इजाजत नहीं है।

खोजबीन करने से पता चला है कि फिलम इण्डस्टरी मे पहले किसी ने भी इन महाशय ओ०पी० सिंह के बारे में सुना नहीं था, उन्होंने नताशा को साइन तो किया था, पर कोई फिलम बनती दिखाई नहीं दे रही ? देव को इस बात का दुःख है कि नताशा ने यह बात उसे पहले क्यों नहीं बताई। फिर सिंह क्या चाहता है ? मिली भगत ! ब्लैक मेल से पैसा। देव ने नताशा की तरफ से कोर्ट में जाने का फैसला किया है।

सुभाष किशोर कुमार : किशोर कुमार ने प्रोडयूसरों के लिये गाने की रिकार्डिन्ग करने से पहले पूरे पैसे ले लेने की अपनी ही तरकीब निकाली हैं। बेशक यह साधारण तरीका है कि गाने की अन्तिम रिकार्डिंग से पहले ही प्रोडयूसर पार्श्व गायक को पूरा पैसा दे देते हैं। इस कारण जब किशोर कुमार साउंडप्रूफ कमरे में गाने की रिहर्सल शुरू करते हैं वे अन्तिम रिकार्डिंग कभी भी नहीं देते जब तक उनका सेक्रेटरी उन्हें पूरे पैसे मिल जाने का कोड सिगनल नहीं देता।

ऐसे ही एक मौके पर सेक्रेटरी ने सिगनल नहीं दिया और रिहर्सल पर रिहर्सल चलती रही। तब बेहद परेशान

हो किशोर कुमार ने सेक्रेटरी को बुला उसे डांटा। सेक्रेटरी ने कहा मैं आपको सिगनल कैसे देता, आप स्वयं ही तो प्रोड्यूसर हैं, यह आपकी अपनी ही फिल्म है।" किशोर बेहद शर्मिंदा हुआ। ओवर टाइम भी उन्हें ही अपनी जेब से देना पड़ा। फिल्म थी 'सुभाष डैंडी'।
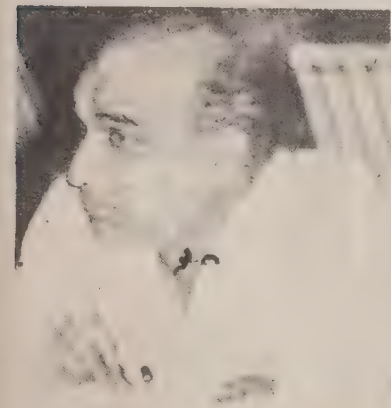
सेंसर बोर्ड की पोल खुली—

सेंसर बोर्ड ने देव आनन्द की फिल्म 'स्वामी दादा' को आखिर इतनी बार क्यों देखा ? क्रिस्टी ओ नील के नग्न सीन के कारण। जिसमें वे एक-एक कर अपने सारे वस्त्र उतार देती है और केवल एक पारदर्शी लिंगरी पहने रह जाती है, बाद में स्वामी दादा के साथ एक प्रेम सीन का अभिनय करती हैं जो देव स्वयं हैं।

हालांकि यह सीन केवल विदेश जाने वाली फिल्म के ही लिए था फिर भी सेंसर वालों ने इसे बार-बार देखा और कई बार तो अपने परिवार के सदस्यों और मित्रों को भी इस मजेदार सीन का आनन्द उठाने के लिए आमन्त्रित किया। साबित कर दिया गया कि जो जनता के लिए जहर है वह सेंसर के लिए अमृत है।

कमलाहसन की दोहरी विजय

कमलाहसन अत्यन्त ही भाग्यवान अभिनेता हैं। इस वर्ष उन्होंने दो-दो फिल्मफेयर अवार्ड प्राप्त किये। एक तमिल फिल्म में अभिनय के लिये तो दूसरा तेलगू फिल्म के लिये। इसके अतिरिक्त जब दक्षिण के जाने माने कलाकार शिवाजी गणेशन ने उन्हें इनाम दिये तो तुरन्त नीचे झुक कमलाहसन ने उनके पांव छुए जिसके बदले शिवाजी गणेशन ने आदर करने वाले नौजवान को गले लगा लिया।

परन्तु जब पैसे का प्रश्न आता है तब कमलाहसन किसी भी फिल्म में कैसे भी रोल को मना नहीं करते, चाहे रोल छोटा हो या बड़ा, कहने की आवश्यकता नहीं, 'धूप रहते घास सुखा' लेने की ही इनकी पालिसी

मोहन मित्तल 'उदाम' गांव अशोक कुमार जिन्दल, नई वीरेन्द्र कुमार आचार्य, गांव व महेश कुमार नोलानी, 124/210 अनिल कुमार अग्रवाल पुत्र श्री राकेश विशिष्ट, 806. टेवीवाल नरेन्द्र कुम
मदलपुर, जिला हिसार, 18 बस्ती, रेवाड़ी, हरियाणा, 18 पो० रक्कड़, पालमपुर, (हि.प्र.) गोविन्द नगर, (कानपुर), 18 हरबंस लाल अग्रवाल, ठठयारी कलां, लुधियाना, 19 वर्ष, पत्र- का बास,
वर्ष, पत्रकारिता व पत्र-मित्रता। वर्ष, किताबें पढ़ना, घूमना। 18 वर्ष, टिकट संग्रह करना। वर्ष, पत्र-मित्रता करना। गेट, बरेली, 17 वर्ष, पढ़ना। मित्रता करना। वर्ष, क्रिके

सुरेन्द्र कुमार, पूनम वैरायटी गुरुचरण सिंह भाटिया, म. नं० प्रवीण कुमार अवस्थी, फ्लैट नं. मनोज कुमार गुप्ता, मोहन हरिसनमैमी, 3 पूर्वी मार्ग, वसंत शरद कुमार जैन, राजकमल अनिल कुम
स्टोर, पत्थर वाजार, खैरनगर, 652-बी, सेन्टर कालोनी बारा- 769, लालबहादुर शास्त्री नगर, नगर, एफ 126 हिन्डौन सिटी, विहार, नई दिल्ली, 22 वर्ष, आर्ट सविस, बड़ौत, 18 वर्ष, नई दिल्ली
मेरठ, 19 वर्ष, किताब संग्रह। णसी, 19 वर्ष, फरमाईश करना पटना, 16 वर्ष, पत्र-मित्रता। (राज०) 18 वर्ष, पत्र-मित्रता। गीत गाना, पिक्चर देखना। चित्रकारी करना, पढ़ना। मित्रता कर

प्रहलाद प्रसाद गुप्ता 'एन' फरहान हाशमी, 2117, आहता योगेन्द्र कुमार त्यागी, 20, विनोद सिंगला, गुड़ीहननुर, विजय कुमार गुप्ता, आर. एस. बाबर फैजी खान, 850, खैर एम. एम. स
बिल्डिंग, चौक बाजार, दार्जि-काले साहब, कासिम जान, कल्याण नगर, मेरठ, 20 वर्ष, (आं.प्र.), 17 वर्ष, पत्र-मित्रता डी. कालेज झरिया, 18 वर्ष, नगर मेरठ, 15 वर्ष, सहायता गंज, लखनउ
लिग, 17 वर्ष, जूडो कराटे। दिल्ली-6, 19 वर्ष, मित्रता। शतरंज खेलना, पढ़ना। करना, दीवाना पढ़ना। कोर्स की किताबें पढ़ना। करना, प्रेम करसा। करना, हास्य

कुमार गति बरनवाल, जीतपुर हिमाल सागर नेपाल बुक हाऊस प्रवीण कटारिया, मेन रोड, अजहर हसनैन शम्सी, नगीना राजेश कुमार गर्तोला, 20 389 योग रत्न बज्राचार्य, ओम बहाल विक्रम सिंह
बाजार, (बारा), नेपाल, 22 ओताहिती काठमांडो, नेपाल, शलेगांव, जि. यवतमाल, महा० (बिजनौर), 19 वर्ष, पत्र-नक्साल चार ठुडे, काठमांडो, नोल जोरगणेश, काठमांडो, केमरगंज,
वर्ष, घूमना, कैरम खेलना। 15 वर्ष, पत्र-मित्रता करना। 16 वर्ष, दीवाना पढ़ना। मित्रता करना, घूमना। नेपाल, 18 वर्ष, मित्रता करना। नेपाल, 14 वर्ष, फिल्म देखना। पत्र-मित्रता

अजय कुमार, पीरबहोर पटना, मनीश अनेजा, अनेजा क्लाथ मनोज अग्रवाल, राजेश क्लाथ मांगेराम अग्रवाल, शिव स्टोर, विपिन कन्हैया, 29 31, वेस्ट हरदीप सिंह सिंद्, मकान नं० अमन खन्ना
बिहार, 20 वर्ष, पत्र-मित्रता एण्ड कटपीस स्टोर, बोम्बे गली हाउस, तुरा, 15 वर्ष, दीवाना इन्दिरा मार्केट, मजरी, जिला पटेल नगर, नई दिल्ली-8, 18 281/33-ए, चण्डीगढ़, 19 वर्ष, नगर,
करना, दीवाना पढ़ना। सिरसा, 18 वर्ष, फरमाईश। पढ़ना, खेलना। बिलासपुर, 15 वर्ष, मित्रता। वर्ष, पत्र मित्रता करना। नदी में तैरना। (बिहार).

ऋषभ कुमार जैन' कटपीस प्रदीप कुमार, बी रेडिमेड, रुद्र रजिन्द्र बठला, मेन बाजार, विरेन्द्र पटेल, पृथ्वीगंज, बास- अशोक कुमार कश्यप, ii सी-
साड़ी सदन, सागर, (म. प्र.), पुर, नैनीताल, 18 वर्ष, पत्र- कलानौर, (रोहतक), 22 वर्ष, वाड़ा, राजस्थान, 15 वर्ष, 189, नेहरू नगर, गाजिया-
18 वर्ष, कहानियां पढ़ना। मित्रता करना, दीवाना पढ़ना। पत्र-मित्रता, फिल्में देखना। पत्र-मित्रता करना। बाद, 20 वर्ष, दोस्ती करना।

हमारा पता : दीवाना फ्रैंड्स क्लब,
८-बी, बहादुरशाह जफ़र मार्ग, नई दिल्ली-११०००२
कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ------------------------------

पता ------------------------------

दीवाना फ्रैंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रैंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिये जिसे दीवाना में प्रकाशित किया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

तेज प्रेस, नया बाजार, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिये पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित, प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता।

R.N. 16596/65 Regd. No. D-(C)1020/82